

॥ हरिःॐ ॥

कैन्सर का प्रतिकार

पू. श्रीमोटा के पत्र



अनुवाद : डॉ. कविता शर्मा 'जदली'

संपादन : रजनीभाई,

(ट्रस्टी, हरिःॐ आश्रम, सुरत)

॥ हरिःॐ ॥

● अनुक्रमणिका ●

१. एक ही रास्ता	५	३४. मुक्तात्मा की गूढ संगतकला	३०
२. कैन्सर का डर !	५	३५. जिजीविषा की उत्तेजना	३१
३. शरीर ५		३६. आत्मनिष्ठ से सम्बन्ध	३२
४. प्रेरणात्मक धक्का	६	३७. महान प्रभुकृपा	३३
५. शरीर अर्थात् जीवन नहीं	७	३८. प्रभु का प्रेम	३४
६. हमारे हाथ में क्या है ?	८	३९. दुःख में प्रभु का साथ	३५
७. प्रार्थना और उपचार	८	४०. कर्म प्रभुप्रीत्यर्थ करें	३७
८. शरीर की चिन्ता ?	९	४१. दुःख-दर्द प्रभुप्रसादी है	३८
९. प्रार्थना का हार्द	१०	४२. दुःख भोगने की कला	३८
१०. मुक्तात्मा की उद्देश्यहीन प्रीति	११	४३. भगवत् कृपा का	
११. दुर्लभ देह	१२	अनोखा चमत्कार	४१
१२. सर्वत्र प्रभुकृपा	१३	४४. स्वजनों के शरीर की तकलीफों	
१३. प्रार्थना का सहारा	१४	को भुगतना	४२
१४. प्रभुपंथ पर सदा यौवन	१५	४५. प्रभुप्रार्थना से कृपाशक्ति	
१५. हमारा धर्म	१६	प्राप्त होगी	४३
१६. प्रयत्न और सावधानी	१७	४६. अशांति, क्लेश में हरिस्मरण करें ...	४५
१७. संत की शीख	१८	४७. 'मोटा' की मदद प्राप्त करने	
१८. शरीर की आवश्यकता	१८	की कला	४७
१९. प्रार्थना और उपचार	१९	४८. हरिस्मरणयुक्त कर्म यज्ञ है	४७
२०. आग्रह किस बात का ?	१९	४९. प्रभु के मार्ग पर जाने की	
२१. दाम्पत्य का उद्देश्य	२०	स्वजनों को हड़बड़ी नहीं है	४८
२२. सद्भाव	२१	५०. स्वजन के लिए मोटा की भावना ..	५०
२३. सावधानी रखना	२१	५१. 'मोटा' के साथ, संबंध से	
२४. दर्द सहना	२१	भावनात्मक बनें	५२
२५. उत्तम औषधि	२२	५२. हरिस्मरण न करने का दण्ड	५५
२६. रोग बढ़ जाय तब भी—	२२	५३. स्वजनों की मृत्यु के समय	
२७. दुःख कैसे कम हो ?	२३	'मोटा' की प्रार्थना	५५
२८. श्रद्धावृद्धि	२४	५४. अंतर की जागृति वही जीवन	
२९. सावधानी रखनी यानी ?	२४	विकास की नींव	५७
३०. सबसे बड़ी शरण	२६	५५. साधना-मर्म	५८
३१. ज्ञानात्मक तादात्म्य	२६	५६. पूज्य श्रीमोटा के जीवन	
३२. मृत्यु की तैयारी	२८	का परिचय	६१
३३. जीवन अनंत, मृत्यु आकस्मिक	२९		

॥ हरिःॐ ॥

● समर्पणांजलि ●

पू. श्रीमोट्टा के सोलन (हि. प्र.) निवासी
प्रेमी-मौनार्थी भक्त-दंपति डॉ. प्रवीण गुप्ता और
सौ. कमलबहन और उनके परिवारजनो को सस्नेह
समर्पण ।

दि. १३-४-२००८
(रामनवमी)

— ट्रस्टीमंडल,
हरिःॐ आश्रम, सुरत

॥ हरिःॐ ॥

● निवेदन ●

पू. श्रीमोटाने सन् १९५५-५६-५७ दरमियान कैन्सरग्रस्त एक साधक-मित्र को पत्र लिखे थे। उन पत्रोंमें से महत्त्व के पत्रों का संपादन करके डॉ. रमेशभाई एम. भट्ट, अमदावाद ने एक पुस्तिका प्रकाशित की थी।

इन पत्रों में पू. श्रीमोटाने मानवदेह का महत्त्व, रोग के आगमन का हेतु, जिजीविषा प्रबल बनाने का प्रयोजन, फिर भी मृत्यु का स्वीकार की तैयारी करने की रीत इ. के विषयमें बहुत ही चिंतनात्मक लिखा है। पू. श्रीमोटा के इन पत्रों का महत्त्व जितना हिंमत और खुमारी प्रेरक है, उससे विशेष तो आध्यात्मिक दृष्टि, वृत्ति को बनानेवाला और विकसित करनेवाला है।

इस पुस्तिका का मुद्रण-शुद्धि का कार्य में डॉ. घनानंद शर्मा 'जदली' ने प्रेमभक्तिपूर्वक किया है। इस पुस्तिका का मुद्रणकार्य मुखपृष्ठ सहित श्री श्रेयसभाई पंड्या, मे. साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि., अमदावाद ने पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत भक्तिपूर्वक प्रेमभाव से किया है। हम उनका खूब खूब आभार मानते हैं।

इसके पठन से कैन्सर-पीडित दरदी और उनके संबंधीओं को सांत्वना प्राप्त हो, इस हेतु से प्रस्तुत पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है। यह हेतु फलित हो ऐसी पू. श्रीमोटा से प्रार्थना।

हर कोई इस प्रकाशन का स्वागत करें ऐसी श्रद्धा है।

दि. १३-४-२००८

(रामनवमी)

— ट्रस्टीमंडल,

हरिःॐ आश्रम, सुरत

एक ही रास्ता

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

हरिस्मरण किये बिना कोई दूसरा रास्ता नहीं । इसके बिना दूसरे किसी से शांति भी नहीं मिल सकती । दूसरा कोई हमें शांति नहीं दे सकता । ●

कैन्सर का डर !

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

सारी वास्तविकता जानकर खुश हुआ हूँ । यहाँ भी कैन्सर का एक Institute है । वहाँ भी जाँच करवाकर स्वयं ही पूछ लिया था ।

कैन्सर की भीति से हमें जरा भी भड़कने की आवश्यकता नहीं । हरिस्मरण में जीने के लिए यह एक प्रेरणात्मक हरिकृपा का धक्का है । दोनों व्यक्ति हरिस्मरण करते रहें । ●

शरीर

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

अब हमें जितना हो सके उतना हरिस्मरण में जीना है । जितना हो सके उतना किया करें और प्रार्थना भी करते रहें ।

शरीर मिथ्या नहीं है । शरीर की आवश्यकता विकास के कार्य के लिए अनिवार्य है ।

मैं तो स्वयं ही जितना संभव हो सके उसे उनकी कृपा से किया करता हूँ। अभी तक तुम दोनों को मुझ पर भरोसा, श्रद्धा और प्रेम नहीं है, इसकी मुझे पूरी जानकारी है पर इससे मुझे कुछ भी लेना देना नहीं है।

सदा स्मरण में जीते रहो, यही प्रार्थना है। ●

प्रेरणात्मक धक्का

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

ऐसा रोग होने से शरीर अब नहीं रहेगा और ऐसा रोग होने से अब शरीर हल्का लगता है इससे शरीर रहेगा — ऐसा, दोनों ढंग से मानना अयोग्य है। कैन्सर का रोग ही खराब माना जाता है। इसका योग्य परिणामदायी उपचार अभी तक नहीं खोजा गया है। अतएव, हमें चेत जाना चाहिए। इसके जैसा प्रेरणात्मक धक्का और क्या हो सकता है? अब तो शरीर जानेवाला हो या न हो तब भी बिलकुल शोक न हो, ऐसी पक्की जीने की तैयारी कर लेनी चाहिए।

सही जीवन तो इसके बाद की स्थिति का ही माना जाता है और वह भी हरिस्मरण में निष्ठापूर्वक प्रेमभक्ति की भावना जागृत किये बिना कभी संभव नहीं होता।

तुम्हारी पत्नी जया भी हरिस्मरण और प्रार्थना किया करे। हमारा संबंध केवल शरीर के कारण है, ऐसा तो कुछ है नहीं। तथापि शरीर मिथ्या है, ऐसा भी नहीं है।

शरीर का महत्त्व विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसलिए हो सके तब तक शरीर को बचाना उचित है। हरिस्मरण के नशे में डूब जाओ। डूबते जाओ यही उत्तम है। ●

शरीर अर्थात् जीवन नहीं

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

भाई को जानकारी होनी चाहिए कि कुछ भी हो, परन्तु जिजीविषा की भावना को जरा भी मंद न पड़ने दें। जीवन की शृंखला अनंत है, जीवन थमता नहीं है, अटूट है। शरीर, जीवन नहीं है। जीवन की अनंतता के अनुभव के लिए शरीर आवश्यक है। इसीसे शरीर का महत्त्व अधिक है। इसीलिए शरीर को टिकाने के लिए प्राचीन ऋषिमुनियों ने विभिन्न विद्याओं का अध्ययन किया और शरीर को टिकाये रखने के लिए हठयोग की साधना की भी खोज की।

अभी, हमारे लिए यह संभव नहीं है। इसलिए शरीर के लिए और कुछ करना हमारी विवशता है। हमें प्रार्थनाभाव से ऐसी जिजीविषा की भावना को विशेष रूप से उत्तेजित करते रहना चाहिए।

जीवन के पीछे भी कुछ है और आगे भी कुछ है। अभी जी रहे हैं, उतना ही मात्र जीवन है और उसके आगे भी कुछ न था और बाद में भी कुछ नहीं है, ऐसा जो विचार है वह अनुभवजन्य नहीं है। जमीन में बीज बोये जाते हैं, उसके बाद उसमें जीवन फूटता है, परन्तु बीज का भी पहले जीवन था। जो कुछ भी दृष्टिगत होता है, उसके पहले और पीछे भी कुछ न कुछ अवश्य होता है।

इसीलिए मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि शरीर का अस्तित्व मात्र जीवन नहीं। शरीर के लिए अधिक हायतोबा करने की आवश्यकता नहीं है। यदि मानव को चिंता करनी है तो मात्र जीवन की करनी चाहिए।



हमारे हाथ में क्या है ?

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

अब तो जिसमें हैं उसमें किस प्रकार शान्त रूप से प्रसन्न रहें और हरिस्मरण चलता रहे वही हमारी योग्य स्थिति होगी। विकास के लिए शरीर एक महत्त्वपूर्ण हकीकत है। शरीर मिथ्या नहीं है, तब भी जानेवाले को रोक तो नहीं सकते। इसीलिए उसके लिए शोक न हो ऐसी स्थिति का निर्माण हो सके तो प्रभुकृपा से यही हमारे हाथ में है। हरिस्मरण करते रहना कोई असंभव नहीं। दोनों ही व्यक्ति इस कार्य के लिए उत्साह के साथ परस्पर चेतना जागृत कर उसमें लिप्त रहते हुए लगे रहें।

रेज (किरणों) के कारण शरीर की स्थिति अधिक ढीली हो जाती है और फिर ठीक हो जाती है, ऐसा सभी का कहना है, तो दो महीने पूरे होने में देर ही कितनी है? दि. १६-६-५६ से तो प्रारंभ हुआ है, तो एक महीना तो होने आया। दूसरा महीना भी देखते ही देखते बीत जाएगा। ●

प्रार्थना और उपचार

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

हृदय से हृदय की आर्तता और आर्द्रता से प्रार्थना हुई हो तो बहुत कुछ संभव हो सकता है।

मैंने ऐसा नहीं कहा है कि मेरी प्रार्थना से ऐसा होगा ही, ऐसा कहना पूर्णतः अज्ञानता ही कहलाएगा। मैं तो प्रार्थना करने में मानता हूँ और ऐसा करता भी हूँ। प्रार्थना न करने का आदेश भी हुआ था किन्तु उसके बिना कैसे रह सकते हैं या रहा जा सकता है? किसी के पत्र में मैंने लिखा भी है।

तुम्हें Third grade कैन्सर है और मेलीगनन्ट टाइप का है। ऐसा पता लगा तब से ही, जो भी संभव हो सके वह उपचार तो लेना ही होगा न ? जो संपूर्ण हरि में डूब गये हैं, ऐसे श्रीरामकृष्ण परमहंस और श्रीरमण महर्षि जैसे भी दवा कराने को कहते थे। उन्होंने वैसा किया है। हम तो कायरता से पीछे भागते हैं। उसमें हमारा कोई पराक्रम नहीं है। वह होते तब तो खुश होने जैसा था। मुझे कुछ भी बुरा नहीं लगा है और लगे भी किससे ? उल्टा जब से तुम्हारे शरीर में अशक्ति अधिक लग रही है, ऐसा जाना, तब से तुम्हें एकाद बार मिल आऊँ ऐसा लगता है। ●

शरीर की चिन्ता ?

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

पत्र के विवरण से तो शरीर की हालत सुधरती नहीं जान पड़ती। भाई लिखते हैं, 'पहले से मेरा स्वास्थ्य ठीक लगता है, इसे तो शरीर ही कह देता है।' यह तथ्य मेरी समझ में नहीं आ रहा है। हमें चिन्ता जैसा कुछ भी न हो यह बात बिलकुल सच है। चिन्ता किसकी हो या होगी? शरीर की चिन्ता करना तो व्यर्थ है। उसकी चिन्ता करें तो उल्टा दुःख बढ़े और उसकी चिन्ता करें तो टिके या जाये, ऐसा थोड़ा ही हो सकता है ? इसीलिए अब तो हरिस्मरण को ही विशेष महत्त्व देना चाहिए। वह होता रहे तो बस, दूसरे किसी की भी आवश्यकता नहीं रहती। शेष तो जो होनेवाला है वह होकर ही रहेगा। हरि जैसे हमारे स्वामी हैं। उनकी कृपा तो शुभाशुभ दोनों में समायी है।

बहन को मालूम होना चाहिए कि तुम्हारे पास किसी भी बात से घबराने का कोई भी कारण नहीं है। चिन्ता तो करनी ही नहीं है और चिन्ता

हो तब यह उपाय उत्तम है कि भावपूर्ण हरि को पुकारें और उनका स्मरण करें। अब हरिस्मरण करते-करते शान्तियुक्त आनंद में रहना है। यही उपचार है। हिंमत पूरी तरह से रखनी है।

हरिस्मरण करते रहें। हरिस्मरण चलता रहेगा तो बस है। ●

प्रार्थना का हार्द

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

कल से तुम्हारे विचार बार-बार आ रहे हैं, वैसे ही उन स्मरणों को प्रेमभक्तिभाव से, प्रार्थना द्वारा प्रभु के चरणकमल में समर्पण करते जा रहा हूँ।

मेरी प्रार्थना से शरीर टिकेगा ही ऐसा मानने की लालसा रखने का कोई भी कारण नहीं है। ऐसा हो तो प्रार्थना का महत्त्व कोई विशेष नहीं है और वैसे न हो तो उसका महत्त्व कम नहीं हो जाता। प्रार्थना का विषय भले ही शरीर के निमित्त हो, किन्तु वह तो कितना ही समा लेता है। प्रार्थना हम सभी कर सकते हैं।

यदि सच्चे अंतर के गहन भाव से एकाग्रता को केन्द्रित कर, प्रार्थना हो तो वह शक्ति है, ऐसा मेरा प्रभुकृपा से अनुभव है। हमें कोई भी उलझन, शोक, पश्चाताप, कठिनाई अथवा ऐसा कुछ भी हो तब प्रार्थना का सहारा लिया जा सकता है। अलबत्ता, इसमें जिसे श्रद्धाविश्वास हो, उन्हें ही यह प्रेरणात्मक सिद्ध हो सकती है, अन्य तो करें ही क्यों?

●

मुक्तात्मा की उद्देश्यहीन प्रीति

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

तुम्हारे हृदय में मेरे लिए भाव नहीं है, इतना ही नहीं अन्यथा वृत्तियाँ भी हैं। तुमने इस जीव को बहुत गालियाँ दी हैं और उसके फोटो को तुमने उल्टा टाँगा है और इस प्रकार तुमने मेरे सामने कहा है। जो कि ऐसा करने में मन में निहित हेतु था। यह सब जानने पर भी तुम दोनों पर मुझे कभी अन्यथा भाव प्रकट नहीं हुआ और न ही तुम्हारे साथ संबंध तोड़ डाला है। तुमने तो बहुत बार इस जीव की उपेक्षा की है, अवगणना भी की तब भी तुम मेरे दिल के ही स्वजन हो और रहोगे ही।

मेरी प्रार्थना से तुम्हारा शरीर अच्छा होता जा रहा है, ऐसा मानने से तुम्हारी श्रद्धा, भक्ति बढ़े तो वह उत्तम है। बाकी third grade malignant टाइप का कैंसर हो, उसे ठीक होने की संभावना के विषय में सभी मना करते हैं। सभी जगह जहाँ भी पूछ देखा है, किन्तु उससे हम थोड़े ही बैठे रह सकते हैं? हमसे जो भी संभव हो सके वह उपाय तो करते ही रहना चाहिए।

संग्राम ही जीवन का सबसे बड़ा धर्म है। यदि अवरोध आते हों तो उनके सामने अंतर के तेज से संग्राम करते ही रहना चाहिए। अतएव ऐसा ही होनावाला हो तब भी उसे क्या परिवर्तित नहीं किया जा सकता है? अर्थात् परिवर्तित किया जा सकता है, ऐसी अंतर की भावना जाग्रत कर हरि के चरणकमल में प्रार्थना करते ही रहना चाहिए। प्रार्थना में मात्र शरीर ही होता है, ऐसा नहीं है। उसकी समग्रता और अटूटता भी होती है।

तुम्हारा शरीर अच्छा होता जा रहा है, इससे तुम्हें अभी खुश नहीं होना चाहिए। ऐसा नरम-गरम तो चलता ही रहेगा। किस समय कोलेप्स (अन्त) हो जाय, कहा नहीं जा सकता। एकबार संपूर्ण ठीक हो जाओ फिर तुम मेरे एकदम सच्चे भक्त बन जाना।



दुर्लभ देह

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

शरीर को मैं तो बहुत ही महत्त्व देता हूँ। चेतन के अनुभव के लिए शरीर का महत्त्व है। मानव शरीर के बिना उसका अनुभव संभव नहीं है। जिस आदर्श के शिखर पर पहुँचना है, उस शिखर पर बिना शरीर के, शरीर के आधार बिना चढ़ना भी संभव नहीं है। मानवजन्म के ऐसे कितने ही शरीर - असंख्य शरीर देह माध्यम खोने पर भी प्रभु से प्रभु की कृपा से कोई ही मानव जन्म युक्त शरीरधारी जीव द्वारा प्रभु की खोज संभव हो पाती है; उनमें भी ऐसी खोज करनेवालों में बहुत कम को ही सच्ची प्रबल तमन्ना लग पाती है। ऐसी तमन्नावालों में भी कोई ही उसे अनुभव कर पाता है। इसीलिए इस मानव शरीर को दुर्लभ माना गया है। इसलिए उसका जतन करना आवश्यक है। इससे शरीर टिकता हो या न टिकता हो, तब भी उस प्यारे के कृपाबल को आमंत्रित करने के लिए यह जीव सदा तत्पर रहता है।

यद्यपि आज या कल शरीर तो जानेवाला ही है, यह सत्य है। तब भी उसके साथ ही साथ शरीर की भी अटूटता और समग्रता एकसाथ कभी टूट नहीं पाती। उसीसे शरीर का पुनः जन्म होना संभव होता है। इसीसे मुझे श्रीहरि की प्रार्थना में अनंत संभावनाएँ दिखाई देती हैं और अनुभव होती हैं। इसीलिए उसका सहारा यह जीव कभी नहीं छोड़ सकता। तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का सतत हरिस्मरण चलता रहे, ऐसा जीवन जीओ।

हरि को न भूलें, इतनी मेरी विनती है। यदि इतना सचमुच दिल से हो गया तो बाकी का तो हरि संभाल ही लेंगे। ●

सर्वत्र प्रभुकृपा

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

तुम्हें चार महीने के लिए तो नित्य तीन-चार घण्टे ऑफिस में बैठकर काम करने की सुविधा मिली है, यह बहुत ही उत्तम व्यवस्था हुई है। ऐसी सुविधा की प्राप्ति मात्र अपने मिलनसार स्वभाव के कारण ही प्राप्त हुई है, ऐसा कुछ नहीं है तथा दूसरे किसी की सहानुभूति के कारण ऐसा होता है, ऐसा भी नहीं है। किन्तु यह जो है, सो है। उसे पहचानकर, समझकर, हृदयपूर्वक सम्मान सहित उल्लासपूर्वक आनंद के साथ उसमें तल्लीनभाव से समाहित हो जाने, सतत जागृतिपूर्वक डूब जाने का, ज्ञानभक्तिपूर्वक प्रयत्न करते रहें तो यह कृपा जीवन में बहुत ही फलीभूत हो सकती है।

अशक्ति होने से बेहोश हो गये और पत्थर पर गिर पड़े तब भी कोई गंभीर चोट नहीं आयी, यह कोई ऐसी-वैसी कृपा नहीं है। सर्वत्र कृपा का अनुभव करते रहें और यह कृपा हृदय में अनुभव हुई हो तो इसमें हमारा मन जरूर तन्मय हो जाएगा। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

आपके शरीर की हकीकत से परिचित हुआ। रोग और शत्रु रात को बढ़ते हैं, ऐसी एक कहावत है। वह कितने ही अंश में सच भी है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

हरिस्मरण करते रहें। उनकी ध्यान-चेतना जीवन के दैनिक कार्यक्रम में प्रगट होने लगेगी तो जीवन आलोकित होगा।

तुम स्वयं प्रभुकृपा से उसकी प्रार्थना एवं स्मरण में लगे रहो।

दूसरा, जब-जब कैन्सर याद आये तब-तब प्रार्थना करते रहें।

दोनों में सुमेल-सद्भाव प्रगट हो, ऐसी कृपा करना।

अपने दिल में प्रेमभक्तिभाव से 'मोट' को याद करते रहना। अधिक तो क्या लिखूँ ?

प्रार्थना का सहारा

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

कैन्सर यह बहुत खराब रोग है। यह जिसे हो जाता है मिटना संभव नहीं है। यदि मिट जाए या ठीक होने लगे अथवा वेदना न हो और असह्य स्थिति न हो तो उसे प्रभुकृपा समझें।

रोग आया है, सावधान तथा जाग्रत रखने। जब हम किसी प्रकार से नींद से जागते ही न थे, उसे हिला-हिलाकर जगाने हेतु वह आया है। इसीलिए अब जागकर जीना है। उनका स्मरण करते रहें।

दर्द तो शरीर को लगा है ! इसीलिए हिम्मत रखकर रोना-धोना बंद कर, हरिस्मरण करें।

पूज्य मामा के शरीर के लिए प्रभुकृपा से जो संभव हुआ-मृत्यु को आते हुए भी रोका जा सका। (यद्यपि सभी के विषय में ऐसा होना संभव भी नहीं) यह तथ्य इतना अधिक दीपक के समान है कि मुझे इससे हरि नाम में अत्यधिक आत्मविश्वास हो गया है। तुम्हारे लिए भी प्रार्थना चल

रही है। यह प्रत्येक सात्त्विक विचार का परिणाम है। यह फलित होना ही चाहिए, किन्तु सामने की ओर से ऐसा प्रेमभक्तियुक्त हृदय का उमंगभरा सहकार प्राप्त नहीं होता।

यहाँ भी एक भाई ने मुझे कुंभकोणम् में लिखा था कि, 'मोट, आपके नडियाद आने से पहले हमारा काम सिद्ध हो ही जाना चाहिए।' मैं तो कुछ भी हो प्रार्थना में ही मानता हूँ। इसीलिए उस भाई के लिए भी प्रार्थना ही किया करता हूँ। प्रभुकृपा तो वह कार्य मेरे यहाँ आने से पूर्व, उनकी कृपा से फलित होना हो तो फलित भी होगा, ऐसी संभावना भी हो सकती है। इसप्रकार, उनकी कृपाशक्ति के बल के कारण उनके परिणाम के कितने सारे प्रसंग इस जीव के जीवन में बने हैं। जिनमें से कुछ ही प्रसंगों को मैंने लिखा है। ●

प्रभुपंथ पर सदा यौवन

॥ हरिःॐ ॥

प्यारे भाई,

शरीर की अशक्ति अधिक लग रही है। यह अच्छा लक्षण नहीं है। शरीर तो आज या कल जानेवाला ही है, यह निश्चित है और हम तो जवान हैं। भगवान के पंथ पर चलने से अब हमें भय कैसा? मृत्यु, यह तो निश्चित सत्य है। इसलिए हमें तो अब लगातार हरिस्मरण करते रहना है। फिर सबसे समर्थ का सहारा है। इसलिए अब तो उसी की शरण स्वीकार कर, कृपा कर हरिस्मरण को अधिक से अधिक महत्त्व देते रहें। ●

हमारा धर्म

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

हरिस्मरण करते रहें। हमें अपना धर्म करते रहना है। सामनेवाला पक्ष हम पर भाव रखता है या नहीं, यह देखना हमारा काम नहीं है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

कच्चा प्याज रोज आधा-आधा सुबह-शाम लेते रहें। कैंसर के रोग को सुधारने में वह मददरूप होता है।

हरिस्मरण अत्यधिक करते रहें। उसमें कोई अवरोध न हो इतनी जागृति और सावधानी अब तो हमें रखनी ही है। अब किसी भी प्रकार की असावधानी रखना उचित नहीं है।

शरीर को श्रम पड़े ऐसा कुछ भी न करें। कृपा कर साइकिल पर आना जाना न करें।

घर में रहते रहते ध्यान न रख, दिल में एकाग्रता केन्द्रित हो कर भाव में लक्ष्य बढ़ावें ऐसी मेरी विनती है।

तुम्हारी पत्नी को उसका सारा काम स्वयं करने देना। तुम अपने शरीर की जितनी संभाल ले सको उतनी संभाल लेना, इस प्रकार के प्रयोग करने में और हरिस्मरण में मस्त हो जाने की विनती है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

मृत्यु के विषय में लिखा है वह 'जीवनसंदेश' में २४९ पृष्ठ पर उस विषय से सम्बन्धित एक पत्र है, उसे पढ़ जाने की विनती है ।

'हरिःॐ' का स्मरण लगातार चलता रहे, इसके लिए उच्चारण सुन्दर ढंग से कर रहे हैं, यह जानकर खुश हुआ हूँ ।

जगत में अपनी अनुकूलता से सब कुछ करने की यदि किसी को आदत होती है वह आज या कल पूरा कभी सफल नहीं हो पाते हैं, यह निश्चित जान लो । ●

प्रयत्न और सावधानी

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

उच्च स्वर में स्मरण करने में दुःखता है, यह सूचित करता है कि गले में जरूर कुछ है । ऐसी स्थिति में, गले का उपयोग न हो उस ढंग से जीभ और ओठ से स्मरण करें । माला का भी सहारा ले सकते हैं । पत्नी को 'हरिःॐ' का स्मरण ऊँचे स्वर में करने को कह सकते हो और उसमें हमारा लक्ष्य बना रहे । किसी न किसी प्रकार हरिस्मरण की धारणा रहे, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है और उसके लिए प्रयत्न करते रहें ।

गले से खून निकलता है, यह बात बिलकुल अच्छी नहीं है । तुम्हें आराम की बहुत आवश्यकता है ।

Deep X-ray लेने की हकीकत जान चुका हूँ । तुम शरीर से अधिक कुछ भी मेहनत न करना और करवाना । घर में ही, घर में थोड़ा बहुत हलन-चलन करते रहना । ●

संत की शीख

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

कल रात को भाई मिले थे। उनका शरीर यों तो अच्छा लगा, किन्तु कैन्सर का रोग खराब है। जब से जाना है तब से मैं तो उनके लिए भगवान को कहता ही रहता हूँ। यदि पूरी तरह मिट न जाय तो बैठे-बैठे खाने की बारी भी आएगी और पैसों की भी आवश्यकता पड़ेगी।

तुम्हारे शरीर तथा पैरों के दर्द की हकीकत को जानता हूँ, तब भी तुम्हें नौकरी छोड़ने की सलाह नहीं देता हूँ। मेरे कहने को यदि प्रेम से, उत्साह से मानोगे तो लाभ तुम्हें ही है। अभी यह नहीं समझ पाओगे। पैसों का खर्च तुम दोनों को बहुत ही सोच समझकर, कृपणतापूर्वक करना होगा। यह वचन ठीक से पालना। भाई का भी पैसों के विषय में कोई ठिकाना नहीं है और शायद तुम भी ऐसी ही हो। दोनों को पैसे खर्च करते हुए सोचना है। जितना बचेगा उतना सोने जैसा उपयोग में आएगा, यह निश्चित है।

दर्द को, प्रेम से सहन किये बिना कोई चारा नहीं। त्रिचिमें बहन को भी यही रोग है। किन्तु वह शान्ति और प्रसन्नता से दिन बिता रही है। मेरी बायीं जाँघ पर भी ऐसा दर्द है। न माने तो कुंभकोणम् पत्र लिखकर पूछवा लेना। बायीं जाँघ कभी तो ऐसी फूल जाती है जैसे बड़ा गेंद ! इसीलिए जो आये उसे प्रेम से सहन करें। ●

शरीर की आवश्यकता

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

शरीर को किसी प्रकार की तकलीफ न हो उसकी बहुत सावधानी रखना। 'हमें तुम देवता द्वारा दिये गये हो।' इसीलिए कृपाकर शरीर की

संभाल पूरी तरह रखनी है। हमें शरीर को अमर नहीं बनाना है, किन्तु जिस उद्देश्य से मिला है उस उद्देश्य के ज्ञान को जगाने के लिए शरीर आवश्यक है। इससे तुम्हें हरिस्मरण अत्यधिक करने की आवश्यकता है। तुम जया को कहते हो सही, पर तुम स्वयं संपूर्ण चेतना के साथ प्रेमभक्तिपूर्वक लगातार नामस्मरण करते नहीं हो। यह कम खेद की बात नहीं है। ●

प्रार्थना और उपचार

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

एकदम लाभ उठाने की वृत्ति कितनी ही बार अहित भी करती है। हरिस्मरण करते रहो और उसमें अखंडता बनी रहे तो वह अत्यन्त उत्तम। ●

आग्रह किस बात का ?

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

हमारी समझ और मान्यता अन्य व्यक्ति को हम बलपूर्वक नहीं मना सकते हैं। इसीलिए हमें एक दो बार प्रेम से कहना चाहिए और उसके अनुसार जो हो वही उत्तम। हमारी समझ के लिए और हमारे स्वयं के लिए भी अत्यधिक आग्रह गलत है। हर बात में द्वन्द्व की दशा का आग्रह कल्याणप्रेरक नहीं हो सकता। आग्रह रखना हो तो साधना का अभ्यास जीवन्त रखने में रखें। ●

प्रिय भाई,

॥ हरिःॐ ॥

प्रेमभाव कृपाकर रखें। तुम्हें आत्मविश्वास दृढ़ हो कि मिट ही जायगा तो मुझ में यही भाव अधिक दृढ़ होकर अधिक जीवन्त रूप में रहेगा। यों तो नित्य ही प्रभु-प्रार्थना चलती रहती है। ●

दाम्पत्य का उद्देश्य

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

अब जीवन में तुम्हारा आत्मविश्वास बढ़ता ही जा रहा है, यह जानकर बहुत खुश हूँ।

‘यदि तुम्हारी आत्मश्रद्धा होगी तो दुर्ग की भी दीवालें फट जाएँगी।’ ऐसा भजन हम पहले गाते थे। हममें आत्मविश्वास सच में ही यदि ऐसा प्रगट हुआ हो तो किसी दूसरे का आत्मविश्वास भी काम आएगा। इसलिए कृपाकर आत्मविश्वास रखते हुए हरिस्मरण करते रहें।

स्त्री का हृदय या पुरुष का हृदय सदा प्रेमभाव का भूखा रहता है। उसे प्राप्त करने पर और ही प्रकार का आह्लाद होने लगता है। ऐसे प्रेम की अभिलाषा में जीवन के जीवन बिता देने की आतुरता हृदय में बनी रहती है। जीवन की वास्तविकता इतनी अधिक रोमांचकारी अनुभव हो कि पूछो ही नहीं। हम अपने आप हमारे जीवन में शुष्कता लाते हैं। जीवन तो आनंद का अखण्ड झरना है। स्त्री-पुरुष दोनों के अलग-अलग प्रकार के विचार, प्रकृति और स्वभाव हैं, ये भी हमें व्यक्तित्व विकास हेतु प्राप्त हुए हैं। यदि ऐसा ज्ञान का बोध प्रगट होने लग जाय तो सदैव आनंद रहेगा और टिकेगा। ●

सद्भाव

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

अभी सद्भाव अधिक से अधिक बनाये रखना है। सद्भाव बनाये रखने में हमें स्वयं को ही लाभ है। लंबे समय तक किसी के प्रति सद्भाव बनाए रखना किस रूप में फूट निकलेगा वह तो आगे जाकर ही पता लगेगा और तब समझ आएगा। सभी के प्रति सद्भाव बनाये रखने में हमें कम से कम घर्षण करना पड़ता है और शांति एवं प्रसन्नता बनी रहती है। इसीलिए इसे तुम्हें करने की विशेष आवश्यकता है। हम जीवन में थोड़े अकेले पड़ रहे हों तो सांसारिक व्यवहार में कुछ अंशों में मिलना-जुलना, एक रस होना आवश्यक है, जो हमें पूरी तरह नहीं आता है। बात करने की भी एक कला होती है और उस तकनीक को तो हमारे समाज में बहुत अल्पमात्रा में कोई जानता होगा। ●

सावधानी रखना

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

शरीर में गर्मी फूट निकले वह अच्छा लक्षण नहीं गिना जाता। कैंसर की दवा आयुर्वेद में तो नहीं है, किन्तु वैद्य का उपचार करके देखना। मिट्टी से लाभ हो तो उत्तम। किन्तु कुछ भी अत्यधिक न हो जाय उसकी कृपा कर सावधानी रखें। ●

दर्द सहना

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

मेरी तुम्हें इतनी प्रार्थना है कि हमें जो कुछ भी है, सभी प्रेम और धीरज से, हरिस्मरण करते-करते सहन करना है। कितना भी दर्द सहन करना पड़े,

कभी कायर न बनें और न त्रसित हों। हमारे भाग्य में जो कुछ भी अच्छा या बुरा हो उसमें शांति, प्रसन्नता, आनंद, धीरज, सहनशीलता, समता आदि गुण बने रहें तो हमारा जीना सार्थक और धन्य बन जाएगा। ●

उत्तम औषधि

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

यदि इन सब के साथ प्रेमभक्ति से नामस्मरण की औषधि ली जाय तो उत्तम। वही सबसे समर्थ है।

सूरत में एक पति-पत्नी आये हैं। उनकी पत्नी के दोनों पैरों में बहुत ही दर्द हो गया था। कुछ सुनकर श्रद्धा भक्ति से दर्द मिटाने के लिए यहाँ आये हैं। हरिस्मरण किया करते हैं। पहले तो खाट में ही पड़े रहना पड़ता था। यहाँ तक कि भोजन आदि का कर्म भी खाट में ही करना पड़ता था। अब, भोजन बनाती हैं, बर्तन माँजती हैं, झाड़ू लगाती हैं, पानी खींचती हैं, कपड़े धोती हैं और नदी तक जा सकती हैं।

प्रभुस्मरण में कृपाकर विश्वास रखें। मुँह से न बोल सकें तो जीभ हिलाकर स्मरण करें। जब तक यह जीव है, तब तक उसमें श्रद्धा-भक्ति रखें।

मिट्टी के पट्टे से ठीक होता हो तो ठीक है, उसे चलने देना। वैद्य की दवा सानुकूल रहेगी, ऐसा लगता हो तो वह भी सही। ●

रोग बढ़ जाय तब भी—

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

पत्र की सच्चाई जानकर ऐसा लगता है कि रोग बढ़ रहा है। हमें

किसी भी तरह हिम्मत नहीं हारनी है। जो भी स्थिति बने वह भले ही हुआ करें। हरि का स्मरण किसी भी तरह से हो, वही उत्तम है। ●

दुःख कैसे कम हो ?

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

अशक्ति हो या कुछ भी हो। प्रभुकृपा से हमें मन को शान्त रखकर जीना चाहिए। जितना हो सके हरिस्मरण करते रहें। जो कुछ भी जिस क्षण होने वाला होगा वह होकर ही रहेगा। चिंता या फिकर के विषयको और उसके समय को हम बढ़ाते हैं। जिस दुःख को निश्चितता से और प्रेम से भगवान की कृपा मानकर हम निवेदित करते हैं, उससे वह दुःख और उसका काल दोनों कम हो जाते हैं। इसलिए आनंद से हरिस्मरण में रहकर दुःख का निवेदन करें। किसी भी बात में उच्चाटन करने की क्या आवश्यकता है? जिस दुःख को हम स्वयं दूर नहीं कर सकते, वैद्य या डॉक्टर दूर नहीं कर सकते यानी जो दुःख भुगतना है, उसे भोगे बिना छुटकारा नहीं है। इसलिए हम दवा लें, श्रद्धा रखें और ईश्वर का नाम लेते रहें। ये तीन काम हमें पूरे उत्साह और निष्ठापूर्वक करने हैं।

प्रभुकृपा से मुझे सिर और आँखों का एक रोग है, जिसमें आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है और तीव्र वेदना के साथ चक्कर आते हैं। उसकी वेदना जिसे हुई हो वही जान सकता है। किसी भी बात में हमें किसी भी प्रकार की चिंता करने का कोई कारण नहीं है। भय का कोई कारण नहीं है। 'हाय, हाय' करने से क्या होगा? ऐसे कोई संकट की बात नहीं है। हमें तो कुछ भी हो हँसते मुँह से सहन करना है और मस्त रहना है। संग्राम में ही सच्चे सुख का स्थान है और वह शोभास्पद है। हमें कोल्हू का बैल नहीं बनना। कोल्हू के बैल को एक तो पिलने का दुःख होता है और ऊपर से छड़ी की मार पड़े और धारदार नोंक शरीर

में चुभे वह अलग । हमें किसी भी ढंग से कमजोर नहीं होना है । इसलिए कृपा कर हिंमत रखें, धीरज को बनाये रखें और भगवान का स्मरण कमर कस के लगातार करना । हमारा आधार तो तुम पर है और कितना ऊपर नीचे होता है, उसे लिखकर बतलाने का कोई अर्थ नहीं है ।

तुम्हारे शरीर की ऐसी स्थिति में, मैं तुम्हारे साथ सतत रह सकूँ ऐसा नहीं हो सकता । क्योंकि मुझे प्रवृत्ति के प्रति भी ईमानदारी रखनी है । तुम्हें किसी भी बात में निर्बल होने की आवश्यकता नहीं है । दिल में दिल से दिल की प्रेमभक्ति बढ़ाया करें तो निकटता अनुभव होगी । ●

श्रद्धावृद्धि

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

यहाँ सूरत के मेरे एक मित्र हैं । वह बी. कोम. हुए हैं और उनकी पत्नी जब यहाँ आई तब उनसे पूरी तरह चला भी नहीं जाता था और कुछ भी काम नहीं होता था । नामस्मरण करने से उन्हें लाभ होता जा रहा है । नामस्मरण से सभी का ही रोग मिटता है, ऐसा नहीं है, किन्तु जप में जिसकी श्रद्धाभक्ति होती है, उससे अंतर पड़ सकता है । ●

सावधानी रखनी यानी ?

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

तुम्हारे शरीर के विषय में संपूर्ण समाचार मिलते रहते हैं । थोड़ा समय मिले तो तुम्हें मिल जाने का दिल है । शरीर से थकान लगे ऐसा कुछ नहीं होने देना । शरीर का वजन करते रहना । वजन बहुत कम होने लगे तथा अत्यधिक अशक्ति लगे, भोजन भी कम से कम होने लगे, भोजन कुछ अंशों में बंद होने का समय आये तब प्रभुकृपा से चेतकर हरिस्मरण

करते रहें। इस दर्द में कब galloping period प्रकट होगा कह नहीं सकते। इसलिए सावधान रहने की आवश्यकता है। हमेशा आशावादी रहना और हरिस्मरण में चूक न हो।

जो कुछ होना हो वह भले ही शांति से हुआ करे। हो सके उतनी स्वस्थता हमें बनायी रखनी है। किसी भी तरह की निरर्थक दौड़धूप न करें। जहाँ रেসनेश करनी चाहिए और जहाँ उसका उपयोग करना हो वहाँ न करें तो अंत में कष्ट उठाना पड़ता है। साहस का अतिरेक होगा। अर्थात् किसी भी गुण का बहुत अतिरेक होने पर वह अवगुण बन जाता है, इसलिए कृपाकर संभालना। हमें तो तुम्हारा ही आधार है। जीवदशावाले तो शरीर को मुख्य आधार मानते हैं। जबकि हमारे लिए तो शरीर एकमात्र आधार नहीं है, अंदरूनी शक्ति आधारभूत है। सचमुच, हमने अंदरूनी शक्ति को महत्त्व न देकर, शरीर को महत्त्व दिया है। इसीलिए ही सारी मुसीबत उत्पन्न हुई है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

भगवान के नाम पर तुम्हें विश्वास है, यह अच्छी बात है। किन्तु जहाँ तक जीवदशा विद्यमान है, तब तक उन सबके प्रति कुछ सावधानी से सजगता रखें।

शरीर जब बिगड़ता है अथवा बिगड़ने लगता है, तब उसमें नया-नया कुछ न कुछ जुड़ता जाता है। प्रभु का स्मरण करते रहें। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

तुम्हारे पत्र की वास्तविकता हमें दिलमें भाती तो नहीं है। इसलिए जो उत्कटता प्रकट होती है, उसमें भाव प्रेरित कर जिस प्रकार से श्रेय रहा हो उस तरह से श्रीप्रभु को प्रार्थना करता हूँ।

नडियाद आश्रम में हेमन्तभाई आ जाएँ तो फिर एकबार तुम्हें मिलने

का मन है । किसी भी बात से घबराना नहीं । निरर्थक चिन्ता न करना । भगवान पर भरोसा रखना । सदा आशावादी बने रहे । उलझन में पड़ने से अधिक दुःख होता है और दुःख का समय भी बढ़ जाता है, इसलिए ऐसे समय में भगवान की कृपा से अधिक बहादुर बनना है । शरीर की बिगड़ी स्थिति से हम अधिक सावधानी रखते हुए हरिस्मरण में अधिक से अधिक दिल लगाया करें वही हमारे लिए उत्तमोत्तम है । ●

सबसे बड़ी शरण

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

शरीर का वजन कम होता है या नहीं जरूर लिखना । अशक्ति लगती रहती है और दायीं आँख को नुकसान होता जा रहा है, यह लक्षण ठीक नहीं है ।

हमें यह सब प्रेमपूर्वक निश्चितता से सहन करना है । तुम्हें अधिक व्याकुलता और बेचैनी नहीं होती, इसे प्रभु की कृपा मानता हूँ ।

सच्चा आश्रय तो केवल भगवान का है । उस आश्रय को हमें हृदय से महत्त्व देना है । हरिस्मरण दिल से प्रगट हुआ करे वही एक सबसे बड़ी शरण है । इसलिए कृपा कर उसकी शरण लेते रहना । श्रीहरि ही एक सच्चे मददकर्ता हैं । उनकी जितनी मदद किसी दूसरे द्वारा नहीं हो सकती । ●

ज्ञानात्मक तादात्म्य

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

जिस जिस 'जीव'ने शरीर धारण किया है, उसकी मृत्यु तो निश्चित ही है । इसलिए मृत्यु का डर या शोक नहीं होना चाहिए । उल्टा हमें हृदय से

उल्लास के साथ उसके स्वीकार के लिए उत्कट तैयारी करनी चाहिए। प्रभुकृपा से जो-जो लिख रहा हूँ, उसे आचरण में लाकर कहता हूँ।

इस 'जीव'ने तो जीवन में दो-तीन बार प्रेमभाव से मृत्यु को न्यौता भी दिया है। नंदुभाई के मामा के शरीर के लिए इस जीव ने शरीर को होड़ में लगा दिया था। प्रभु के हुक्म बिना और प्रज्वलित ज्वालामुखी जैसी प्रेरणा के बिना मुझ से कुछ नहीं हो सकता था। यद्यपि कितने ही 'जीव' के साथ उनके शरीर के साथ भी यह जीव ज्ञानभक्तिपूर्वक का तादात्म्य भुगत रहा है, ऐसे तो कितने ही किस्से हैं।

तुम अकेले नहीं भुगत रहे हो उसका मुझे तथा साथ में रहनेवालों को पूरा विश्वास है। प्रभुकृपा से उसका यदि कोई सच्चा संबंधी हो तो यह 'जीव' है। इसका मुझे विश्वास है। किन्तु किसी संसार के सगे संबंधी द्वारा मुझे किसी भी प्रकार का डर या शोक नहीं लगता। अथवा स्वजन के प्रति प्रभुकृपा से उत्पन्न हुई निष्काम भावनायुक्त ममता मुझे उसके साथ जोड़े हुए रखती है सही। प्रभुकृपा से प्राप्त स्वजन के साथ बने रहने का हो गया है सही, परन्तु वे तो सभी मेरे साथ होते नहीं हैं। उनके दिल में मैं नहीं होता, उसका मैं अनेकबार अनुभव कर चुका हूँ।

प्रभुकृपा से मिलनेवालों के साथ, जो प्रेम किया है, उस प्रेम के प्रताप के भाव द्वारा मुझे इतना विश्वास हो गया है कि उस जीव का साथ मुझसे सदा रहनेवाला है। उसमें से कोई भी स्वजन छूट नहीं सकता। यद्यपि ऐसा दावा मुझे नहीं करना चाहिए। किन्तु मुझे तो लगा वही तथ्य तुम्हें लिखकर बतलाया है। इसलिए मेरी विनती है कि उसे कभी नाखुश नहीं होना चाहिए। शोक नहीं करना चाहिए। मृत्यु का डर तो कभी नहीं रखना चाहिए और जिजीविषा की भावना को जरा भी कम न होने दें। जो काम करना हो, जो कोई प्रवृत्ति करें उसमें अधिक रुचि रखें। मूक न बने रहें। सत्संग से भावना प्रकट हो ऐसी बातचीत भी करें। थोड़ा बहुत ऐसा पठन भी करें तो उत्तम। निराशा में तो कभी डूबना नहीं।

शरीर तो जानेवाला है। शरीर के अंदर जो रह रहा है, वह तो नहीं जानेवाला। यह सब बुद्धि का खेल है, ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। इसलिए हमें हृदय से उल्लासभरी तैयारी रखनी है। शांति, प्रसन्नता, धीरज यथाशक्ति बनाए रखना ही उत्तम है। ●

मृत्यु की तैयारी

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

आँख से नाक तक आया है और दायाँ नाक बार-बार बंद हो जाता है और खाते या पीते हुए भी कठिनाई होती है। कान बंद हो जाने से चैन नहीं मिलता। यह सारी सच्चाई दिल को अच्छी नहीं लगती। तब भी शांति और प्रसन्नता की मात्रा हमें घटानी नहीं है। मृत्यु की चिंता करने से या डरने से उसका परिणाम बंद होनेवाला नहीं है। इसलिए निश्चित होकर तुम दोनों हरि का स्मरण करते रहो। तुम्हें बहुत ही हिंमत रखनी है। यदि तुम सच्चे दिल से हममें दिल रखोगे तो हिंमत तुम्हारे साथ है।

घनिष्ठता होने पर भी दिल से दिल में दिल को स्वयं का न गिन सके यहीं एक आश्चर्य की बात है। किसी को आश्वासन देने पर उत्पन्न नहीं होता है। आश्वासन तो स्वयं के भरोसे और विश्वास की भावना से उदित होता है। इससे ऐसी स्थिति में उसका सहाय लें, तभी टिक सकोगे। अभी समय कठिन आ रहा है।

स्वजन की ममत्व भावना संवर्धन करने के लिए है और स्वयं में तन्मयता प्रकट करने के लिए है। जो स्वयं को यथार्थ रूप में जानता है उसे कोई भी कठिनाई, उलझन या परेशानी नहीं सताती। वह तो सभी स्पष्ट रूप से उलझन में पड़े बिना देख लेता है, समझ लेता है और स्वयं स्वस्थ रहता है।

रोने से कुछ भी सिद्ध नहीं होता। उल्टे कायरता और झंझट बढेगी। अब हमें अधिक धीरजवान, हिंमतवान और सहनशक्तियुक्त बनना

है और भगवान पर भरोसा रखना है। जो होनेवाला है, वह होकर ही रहेगा। इसलिए मृत्यु की फिकर-चिंता न कर भगवान पर भरोसा रखें और अत्यधिक विश्वास रखना है। जिसे विश्वास और भरोसा है, वह कभी निराश नहीं होता। निरुत्साह नहीं होता। जिस प्रकार श्वसन क्रिया है, जिस प्रकार रक्त का परिभ्रमण है, उसी प्रकार विश्वास और भरोसा करने से सहारा, मदद, उष्मा, सहानुभूति हमारे पास आ टपकती है। ●

जीवन अनंत, मृत्यु आकस्मिक

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

मूल रोग की जगह पकड़ में आ जाय और वहाँ deep X-ray लिया जाय, ऐसे प्रयत्न हमें करने चाहिए। ऐसा करना बहुत अच्छा भी है।

जिजीविषा की वृत्ति मंद नहीं पड़ी बल्कि बढ़ी ही है, इससे पहले की अपेक्षा स्फूर्ति का अधिक संचार हुआ है, यह सच्चाई पढ़कर मुझे सचमुच अच्छा लगा।

मैं तो जीवन को अनंत मानता हूँ और मृत्यु यह तो मात्र आकस्मिक घटना है। मृत्यु के कारण जीवन की अखण्डता खंडित नहीं होती। मृत्यु को वश किया है, ऐसा तो यह जीव नहीं है; क्योंकि तब तो मृत्यु आयेगी ही नहीं। शरीर धारण किया है तो शरीर जानेवाला ही है, यह ध्रुव सत्य है। किन्तु उसे बढ़ा पाना संभव नहीं है। अनंतकाल तक शरीर टिके ऐसी संभावना नहीं है। इसलिए साधना के क्षेत्र में शरीर के ममत्व की अटूट गांठ का टूटना यह कठिन से कठिन तथ्य है। यह 'अटूट गांठ' को तोड़ने के लिए ही सद्गुरु ने इस जीव को करांची में नंगा घुमाया था तथा अन्य कितनी ही बार भी ऐसा हुआ है।

तुम दोनों को किसी बात से निराश होने की आवश्यकता नहीं है। रुकना नहीं और न ही उलझना। मृत्यु का भय हो ही क्यों? यह

तो निश्चित हकीकत है। जिस प्रकार शौच जाएँ, पेशाब जाएँ, यह जिस प्रकार निश्चित है और इसके लिए कोई भय हम नहीं रखते, उल्टे उस प्रक्रिया से कुछ हल्कापन महसूस करते हैं। इसी प्रकार मृत्यु के विषय में मनन करना। ●

मुक्तात्मा की गूढ संगतकला

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

भाई इस तथ्य को समझें कि जिजीविषा की भावना अधिक से अधिक उत्कट मात्रा में जागृत करते रहें। जीवन तो समग्र और अटूट है। जीवन की अखण्डता टूटती नहीं है। इसलिए जीवन तो हमेशा का है ही। जन्म और मृत्यु तो केवल परिवर्तन है। यद्यपि यह एकमात्र आकस्मिक घटना नहीं है। हम संसारी लोग जन्म-मृत्यु के विषय में विचार करते हैं परन्तु जो सही रूप से अटूट हकीकत है अर्थात् जीवन जो अनंतकाल के लिए टिकनेवाला है और टिकता होता है उसके विषय में कुछ विचार नहीं करते हैं।

मृत्यु को यदि परिवर्तन गिनें तो जैसे राजकोट से मुंबई जायें तो उस विषय में हमें अधिक सोचने जैसा नहीं होता है। किन्तु यह तो एक सहज घटना है। इस प्रकार सामान्यतः मान लेते हैं और स्वीकार भी कर लेते हैं। इसलिए हम सभी को मृत्यु के बदले जीवन विषयक विचार करने की आवश्यकता है।

तुम दोनों प्रभुकृपा से निश्चित रहना और तुम्हारी निश्चितता जितनी रहेगी उसी के अनुसार मुझे यहाँ सुख मिलेगा।

संसार के व्यवहार में व्यस्त रहते हुए अनेक प्रकार के दाँवपेच, प्रपंचों में फँसे 'जीव' की अपेक्षा हमारे जीवन की कक्षा अलग है, यह समझ भी कुछ अच्छी गिनी जा सकती है। तब भी प्रभुकृपा से इस जीव

का तुम में कुछ भाव है, यह भाव किसी भी तरह से काम किये बिना रहनेवाला नहीं है। इसका मुझे दृढ़ विश्वास है। मुझसे तुम दोनों कभी अलग नहीं हो सकते। किसी भी स्थिति में तुम्हें अपने साथ रखे बिना प्रभुकृपा से मुझे चैन मिलनेवाला नहीं है, यह निश्चित है। इस तथ्य का किसी सांसारिक ढंग से भरोसा करा दें ऐसा नहीं है, क्योंकि जीवन की यह एक दिव्य और सूक्ष्म कला की हकीकत है। ●

जिजीविषा की उत्तेजना

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

नाक के अग्र भाग में कैंसर स्पष्ट दिखाई दिया है और वह भाग 'रेडियो एक्टिव' है यानी लाईट देने को कहा उस अनुसार लाईट शुरू होगी।

भगवान की कृपा से जब तुम मेरे पास आये और मुझ से पवित्र संबंध से जुड़ने का निश्चय किया है तब से तुम्हारे जीवन में प्रभुकृपा से प्रभाव दिखाई देने लगा है और १९४२ से तुम जहाँ रहे वहाँ ठीक रहे, अब तक जीवन में सहज रूप से सरलता ही मिलती रही है।

यह एक अत्यन्त जीवघाती कठिनाई आ पड़ी है, यह भी हमें सावधान करने और जागृत करने आयी है और उसे तो मैं स्पष्ट रूप से भगवान की कृपा समझता हूँ। अब हमें किसी भी बात से उलझने की जरूरत नहीं है। जो होना हो सो आनंद से हो। हम उसके लिए तैयार हैं।

मुँह पर किसी भी प्रकार की गंभीरता न रहे और मन में भी गंभीर होने की आवश्यकता नहीं। एकदम सहज रहें और जिजीविषा की भावना को अधिक से अधिक उत्तेजित करते रहना। जीवन कभी टूटता नहीं है। वह तो समग्र और सतत है। संपूर्णतः निश्चित रहें। ●

आत्मनिष्ठ से सम्बन्ध

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

कठोर रहने का बहुत प्रयत्न किया तब भी हृदय भर आने से तुम रो पड़े थे तथा कितनी ही बार भविष्य के विचारों में मन खो जाता है और बार-बार हृदय भर जाता है। इन सभी तथ्यों की जानकारी हुई है।

भविष्य के तथ्य को तो कोई नहीं जान सकता। इसलिए शेखचिल्ली की तरंगों में चढ़ने से उल्टे हानि ही होगी, लाभ जरा भी नहीं है। उससे उल्टा मन अधिक उदास और चिंता करनेवाला बन जाएगा। इससे अच्छा तो भगवान का स्मरण करें, प्रार्थना करें और धीरज रखें, यही उत्तम है। खेद, शोक, चिंता इन सभी से तो उल्टा शरीर दुर्बल हो जाता है, दिल टूट जाता है, हिंमत हार जाते हैं और एकदम हताश हो जाते हैं। इसलिए ऐसे कारणों से कभी हताश न हों, ऐसे संकटकाल में हम सभी का इतने वर्षों के संबंध यदि काम में न आ सके तो ये संबंध खोखले हैं, समझना।

दिल के आकर्षण के बिना संबंध टिकते ही नहीं, तो फिर जिन्दा कैसे रह सकते हैं ? और आकर्षण भावना के बिना प्रगट नहीं हो सकता। इसलिए ऐसी भावना का संवर्धन कर दिल को जोड़ते जाओ तो अधिक सहारा मिलेगा और सहानुभूति भी दिखाई देगी। प्रभुकृपा से ऐसी कठिनाई के समय ही हमें टिके रहना है। किसी भी बात में डर जाने का कोई कारण नहीं है और भविष्य की कोई चिंता है नहीं। दिल से दिल में दिल का जिसके साथ संबंध होता है, वह संबंध कभी टूट नहीं सकता। मुझे तो संसारी 'जीव' का रोना भी मिथ्या लगता है। जिस प्रकार उसका हर्ष भी मिथ्या है, उसी प्रकार उसका शोक भी मिथ्या है। इसलिए मात्र अकेले प्रभुस्मरण में डूबे रहना ही सच्चा रास्ता है। ●

महान प्रभुकृपा

॥ हरिः ॐ ॥

प्रिय भाई,

नाडी की धड़कन बढ़ जाय यह अच्छा नहीं है। यह रोग एक महान से महान प्रभुकृपा है, उसमें मुझे शंका नहीं, ऐसा तुम लिखते हो, वह एक ढंग से पूर्णतः सत्य है। उससे तुम दोनों के जीवन का विकास हो रहा है, ऐसी समझ से मैं खुश हुआ हूँ। ऐसे भयंकर रोग से या मृत्यु से भी क्या हमें घबराने की आवश्यकता है ? और न उसकी चिंता करनी चाहिए। हम तो एकमात्र भगवान का स्मरण करते रहें और जिजीविषा की भावना को कम न होने दें।

हमें भगवान का वरण करना है और भगवान को वरण करने के लिए ही जिन-जिन 'जीवों' ने वेष धारण किये हैं, उन्हें भी कोई कम दुःख और आपत्ति नहीं पड़ी है। अनेक प्रकार के संघर्ष, संकोच, कठिनाई, मुसीबत, उलझन, शारीरिक यातना यह सब उन सभी को भोगना ही पड़ा है। इसलिए हमारे हिस्से में यह भुगतना आया है उसे प्रेम से, हैरान हुए बिना, थके बिना भगवान की कृपाप्रसादी समझकर भोग सकें तो ही अवश्य जीवन का विकास हो सकेगा।

यदि इस भयंकर रोग को भगवान की कृपाप्रसादी समझते हो तो उसे प्राप्त कर भोगते-भोगते आनंदित होते रहें और जब ऐसा लगे तभी कृपा के विषय में हमारी समझ सही है ऐसा समझना और मानना चाहिए। जिस प्रकार गरीब मनुष्य को रोटी खाने को न मिलती हो और पाँच रुपए ऊपर से मिल जाँय तो कितना खुश हो जाय ? उसी प्रकार भगवान की कृपा मिली हो तो हमें उस आनंद का अनुभव करना चाहिए। भगवान हमारे दिल में है और भगवान का स्वरूप ही सच्चिदानंद है। इसलिए तुम पूरी हिंमत रखते हुए संपूर्ण निश्चित रहो। भविष्य की किसी भी प्रकार की चिंता नहीं करनी चाहिए। यों भी जो भविष्य की चिंता करते हैं, वे मूर्ख

मनुष्य हैं और अज्ञानी हैं। जो 'जीव' स्वयं के वर्तमानकाल को योग्य रूप से उत्तम ढंग से रक्षा कर पाता है, उसका भविष्यकाल भी सुरक्षित ही है।

दोनों हरिस्मरण करते रहें। ●

प्रभु का प्रेम

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

तुमने जिस भाव से पत्र लिखा है, मैं उसकी कद्र करता हूँ। तुम मुझे कुछ भी लिखो और कुछ भी कहो, उससे मेरे भाव में कोई अंतर नहीं आ सकता। तुमने गाली दी है, तब भी वही भाव था और आज मुझे भगवान रूप में तुम स्वीकार करते हो, तब भी वही भाव है।

जीवन के विकास में शरीर का बहुत बड़ा योगदान है और इसी कारण यह 'जीव' इस शरीर का बहुत महत्त्व स्वीकार करता है। इससे शरीर बना रहे और अधिक जी सके, इसके लिए जितना संभव हो सके उतना प्रयत्न करना ही चाहिए।

यह 'जीव' भगवान नहीं है। भगवान की कृपा से जो हूँ वह हूँ। उनकी कृपा का जो बल है वही सच्चा बल है। एकमात्र भगवान का भरोसा सच है और उस पर विश्वास रखना ही सही है। मनुष्य कितना ही महान हो, तब भी वह जब तक देहधारी है, तब तक उसमें भगवान का अवतरण हुआ होने पर भी भगवान नहीं है। चेतना में प्रतिष्ठित हुई आत्मा का शरीर वह उसकी मर्यादा नहीं है और ना ही उसका अवरोधकर्ता। उसका शरीर तो अनेक जीवों के साथ हृदय का तादात्म्य भाव से हिस्सा लेता रहता है।

इस शरीर में एक ही दिन में होनेवाले विभिन्न प्रकार के परिवर्तन यह उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। परन्तु उसे निरखने के लिए दिल

चाहिए। इसमें बुद्धि काम नहीं आती। सद्गुरु का शरीर, उसके रीति-नीति, उसकी आदत आदि वे सद्गुरु नहीं हैं। उसके समग्र आधार सहित का चेतन ही सद्गुरु है।

इसलिए हमें तो मात्र हरि का स्मरण करते रहना चाहिए। हरि का स्मरण छोड़ना नहीं चाहिए। वही सच्चा कर्ताहर्ता है। एक ही सच्चा हमारा आधार है। मददरूप है, रक्षाकर्ता है और सच्चा मित्र है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

मेरी नाड़ी की धड़कन भी १००-११२ तक हुआ करती है। आज सुबह ही सूरतवाले शांतिलाल तम्बाकूवाले के पास मपवाया था। यह तो प्रत्यक्ष हकीकत है। इसलिए कृपा कर हरिस्मरण करते रहें और बार-बार प्रभुकृपा से जिसे 'मोट' मानते हो (स्थूल नहीं) उसमें प्रार्थना भाव से दिल लगाये रखें। जब तक शक्ति प्रकट न हो तब तक चलना फिरना नहीं।

किसी भी बात की चिंता न करें। मन में जो विचार जब आये तब उसकी तरंग में न पड़ें, इसका विशेष ध्यान रखें। ●

दुःख में प्रभु का साथ

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

कमजोरी बहुत लगती है, तब भी पूरी स्वस्थता अनुभव करते हो, यह बहुत अच्छा लक्षण है। हर धड़कन में हरिस्मरण करते हो, वह तो उत्तम ही है। भगवान पर विश्वास जैसा कोई बड़ा बल नहीं है। उस पर यदि भरोसा बढ़ जाय और बना रहे तो मनुष्य के हृदय में एक ऐसे प्रकार का बल प्रकट होता है कि जिससे दुःख से पर होने में देर नहीं लगती।

बहन को ज्ञात है कि तुम्हारे पैरों में अभी बहुत उपाधि है, इससे हिंमत न हारें। भगवान पर विश्वास रखें। हम दुःख में अकेले नहीं हैं। यदि इस ज्ञान का बोध जगाते रहोगी तो तुम्हारा दुःख भी हल्का होगा और प्रेम से सहन कर पाओगी। यह कोई तुम्हें मात्र आश्वासन देने की दृष्टि से नहीं लिख रहा हूँ। एक साथ कितने ही जीवों का कुछ न कुछ प्रभुकृपा से यह जीव भुगत रहा है। यह इस जीव की व्यक्त कथनी तथ्य रूप से प्राप्त स्वजन में उसके प्रति सच्चे हृदय की विशुद्ध संपूर्ण प्रेमभक्ति प्रगट न होने से उसका महत्त्व किसी को ज्ञात नहीं हो पाता है। इसका मुझे अफसोस भी नहीं है। परन्तु तथ्यगत धन मिलने पर भी उसका योग्य समय पर सदुपयोग न कर पाने के कारण स्वजन के हित के खातिर प्रभुकृपा से खेद भी प्राप्त करता हूँ।

तुम्हें किसी भी बात से घबराना नहीं है। धैर्यपूर्वक सभी कुछ प्रेम से करते रहें। मन में जरा भी ऊब या त्रास न आने दें। यदि ऐसा हुआ तो सभी किये कराये पर पानी फिर जाएगा। मेरे शरीर की स्थिति चाहे कैसी भी क्यों न हो, तब भी कार्यक्रमानुसार सभी जगह जाता ही हूँ। यह भी भगवान की ही शक्ति है। देखने से शरीर का तो क्षरण दिखाई ही नहीं देता है पर उसकी स्थिति कैसी है, वह तो अंतर तत्त्व ही जानता है।

इस समय तुम्हें बहुत हिंमत और धीरज रखने की आवश्यकता है। कृपाकर सूखकर काँटा मत बनना। तुम्हें शरीर का दुःख होने पर भी प्रभुकृपा से तुम्हारे हिस्से में जो धर्म आया है, उसका तुम प्रेमभक्ति से पालन करना। और सांगोपांग पार उतर जाँय, ऐसा आचरण करना। दुःख में कभी भी अपने को अकेली मत समझना और दुःख में सद्गुरु को और हरि को बार-बार प्रेमभक्ति से स्मरण करते रहें। उनकी कृपा का बल पाने और मददरूप होने के लिए प्रेरित करना। यही हमें टिकाये रखेगा और सहायता करता है, ऐसा अनुभव करते रहें। ●

कर्म प्रभुप्रीत्यर्थ करें

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

तुम्हारा दि. २३-५-५७ का पत्र मिला है। प्रभुकृपा से जो करना है, वह करना ही है। यदि करना ही है तो फिर प्रेम से क्यों न करें? प्रभुकृपा से प्रत्यक्ष जीकर हम तो मिलनेवाले सभी स्वजनों को कहते हैं कि जो कर्म मिला है, उसमें यदि भावना जीवन्त कर सकें और कर्म के हार्द में भावना को जीती-जागती रखी जाय और उस कर्म में उत्तम ढंग से हृदय की भावना प्रकट करते रहें, तो इस ढंग से होनेवाला कर्म भी प्रभुभक्ति ही है। कर्म में भावना जीती-जागती रहे तो ऊब, त्रास, संताप, क्लेश कुछ भी नहीं होता है, यह निश्चित है।

परमात्मा की योजना मंगलमय ही होती है। ऐसी भावना बनाये रखने पर हमारा अपना कल्याण होता है। हमें किसी बात पर व्याकुल नहीं होना चाहिए। संपूर्ण शांति बनाए रखें तथा सब कुछ प्रेम से प्रभुप्रीत्यर्थ अर्पण करते रहें। हम जो कुछ भी करते हैं, सब भगवान के लिए करते हैं, ऐसी भावना करते समय मन को दृढ़ करते जाँय। भावनारहित किया गया कर्म वह सही अर्थ में कर्म नहीं है। उसे तो मात्र फुसलानेवाला गिना जाएगा। भावना से प्राप्त कर्म जो कोई भी करता है, उससे एक प्रकार का गहरा आत्मसंतोष होता है। भावना द्वारा निष्पन्न कर्म से शांति और प्रसन्नता उत्पन्न होती है और हम खिले फूल की तरह रहते हैं। आधि, व्याधि और उपाधि—होते हुए भी यदि भावना बनी रहती है तो वे हमें छू नहीं सकते। इसलिए जीवन में भावना को प्राधान्य और महत्त्व देना चाहिए। और, भावना को जीवन्त रख प्रभुप्रीत्यर्थ संपूर्ण कर्म करना चाहिए। ●

दुःख-दर्द प्रभुप्रसादी है

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

अभी तक तो हमारे शरीर को असह्य कुछ नहीं लगा, उसे प्रभु की कृपा जानें। जो कुछ आ पड़ा है, उसे प्रेम से, संताप-क्लेश बिना बहुत प्रेम से यदि भोग लेंगे तो उसमें से मुक्त हुए समझो। जो कुछ भी मिला है, वह मुक्त होने के लिए और मुक्त होने की तालीम के लिए मिला है। यों तो प्रत्येक जीव अंधेरे में ही भटकता रहता है। परन्तु उसमें ज्ञान की चेतना नहीं होती है। हमें तो प्रभुकृपा से अंधेरे में भटकना नहीं है। जो प्राप्य है वह मुक्त होने के अभ्यास के लिए मिला है, इस प्रकार हृदय में दृढ़ता बनाये रखनी है। दुःख-दर्द तो उनकी कृपाप्रसादी है। 'जीवन पगले' गुजराती पुस्तक में 'दुःख' पर तुम पर लिखे हुए बहुत से काव्य प्रकाशित हुए हैं। मेरे पास उनकी पाण्डुलिपि नहीं है। अन्यथा भेज देता। किसी भी परिस्थिति में शांति, प्रसन्नता धारण कर आगे बढ़ना यह हमारा कर्तव्य और धर्म है। ●

दुःख भोगने की कला

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

जो कुछ भी होता है, उसे आनंद, प्रसन्नता, शांति और धैर्य से सहन करें। ऊब, त्रास या ऐसा यदि कुछ हुआ तो वह दुबारा सौ गुने प्रमाण में सामने आकर खड़ा हो जाएगा। जितनी शांति, प्रसन्नता और धीरज से सहन करेंगे उसी अनुपात में उसकी पकड़ ढीली होगी, यह निश्चित है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

यह पूरा वर्ष हमारे लिए बहुत नाजुक है। जितना समय हमें जीना है, उस समय को शांति, प्रसन्नतापूर्वक हरिस्मरण में बिता सकें तो जीवन सार्थक है। जितना त्रास, ऊब और निराशा बनी रहेगी उससे सौ गुना वह हमारे सामने मुँह फाड़े खड़ा रहेगा, यह निश्चित है। इसलिए वर्तमान स्थिति के विषय में और इस स्थिति में कभी ऊब, त्रास, संताप न आने दें और ऐसा करके हम पर बहुत बहुत कृपा करना। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

भाई के दायें नाक में छः-सात दिन से सूजन है, ऐसा लगता है। इससे नाक की प्रक्रिया न चलने से उन्हें बहुत तकलीफ होती होगी। अब कुछ दिनों में लाईट का उपचार बंद हो जाएगा। अब घर जाकर राजकोट में कैसा सुधार होता है, उस पर सारा आधार है।

१९५७ का यह वर्ष बहुत कठिन है, ऐसा मैंने तुम्हें एक पत्र में लिखा है। कठिन वर्ष के छः महीने तो निकल गये हैं। अब बाकी के छः महीने यदि प्रभुकृपा से ज्यों-त्यों निकल जाँय तो पुनर्जीवन होगा।

शरीर में कमजोरी रहती है, उसके इन्जक्शन लेने थे तो ले रहे होंगे। ५-६ महीने में अहमदाबाद की वाडीलाल होस्पिटल में कैंसर के दर्द के उपचार के लिए कोबाल्ट के किरण लेने की व्यवस्था शुरू होनेवाली है, ऐसा सुना है। यदि वह हो जाय तो वह कैंसर के लिए अकसीर इलाज है, ऐसा सभी कहते हैं। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

मैं स्वयं राजकोट आऊँ तभी भावना व्यक्त हो पाएगी, मैं ऐसा जरा भी नहीं मानता। जीवन में किसी 'जीव' को कभी मिला न होऊँ तब भी उस जीव के लिए मुझे भाव प्रवणता होती है। यह तथ्य किसी दूसरे के मानने या समझने में न भी आये और वह न माने तो भी उसमें किसी का दोष नहीं माना जाएगा। परन्तु सच्चाई यही है। न आ पाऊँ तो दुःखी न होना और न कम आँकना। मुझे इसी प्रकार आचरण करना चाहिए या वैसे या तो दूसरे की आशा—अपेक्षानुसार ही चलना चाहिए, ऐसा अब कुछ नहीं रहा। पहले प्रभुकृपा से ऐसा होता था, वह भी तुम्हारे हृदय का इस जीव के प्रति भाव को व्यक्त करने हेतु। इतना ही नहीं और अभी कोई नया संबंध संपर्क में आएगा तो उसके लिए ऐसा अवश्य करूँगा। इसलिए प्रत्येक जीव के साथ आचरण का स्तर प्रभुकृपा से भिन्न-भिन्न होता है। यद्यपि हरेक जीव का भी ऐसा ही है। तब भी मुझ अकेले को यह लेना पड़ता है। यह तथ्य स्पष्ट रूप से इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम्हारे लिए विशेष प्रेम का उन्मेष हो और भाव जाग्रत हो। मात्र वाणी विलास से या लिख देने मात्र से कुछ हाँसिल नहीं होनेवाला है। तुमने तो उल्टे इस जीव को गालियाँ देने और कोसने में कुछ भी बाकी नहीं रहने दिया है। और यदि कुछ दिया है तो कष्ट दिया है। जिसके हित में और जिसके चिंतन में ही इस 'जीव' का समय व्यतीत होता है और जिसका श्रेय प्रभुकृपा से हृदय में बसा है वह भी जिन जीवों द्वारा परखा नहीं जा सका, वैसे जीवों को विशेष क्या कहना ? ●

भगवत् कृपा का अनोखा चमत्कार

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

भाई की नौकरी घर बैठे चल रही है, यह एक बड़े से बड़ा आश्चर्य है। श्री परीक्षितभाई को भी सुनकर बड़ा अचंबा लगा था। पहले के किसी देशी राज्य में राजा की मेहरबानी से ऐसा कुछ हो सकता था। परन्तु हमारे राज्य में ऐसा होना संभव नहीं।

बहुत वर्षों पहले भायली—कोयली गाँव में मनसुखराम नामक शिक्षक थे। उनका प्रत्येक पूर्णिमा को डाकोर जाने का नियम था। एक पूर्णिमा को वे डाकोर गये थे, तब उनके स्कूल की मुलाकात डिप्टी साहब ने ले डाली। तब स्कूल में मनसुखराम उपस्थित थे। इन्स्पेक्टर साहब स्कूल की मुलाकात लेकर स्टेशन पहुँचे तब उसी रेलगाड़ी में से असली मनसुखराम शिक्षक उतरे। उन्होंने अपने साहब को कहा, 'साहब, मेरा व्रत है कि हर पूर्णिमा को डाकोर में रणछोड़राय के दर्शन करना। मैं डाकोर होने के कारण स्कूल में उपस्थित नहीं रह सका। इसलिए आप मुझे क्षमा करें।' तब उस साहब ने कहा, 'तुम स्वयं तो वहाँ स्कूल में उपस्थित थे और स्कूल की रिपोर्ट बुक में तुम्हारे कामकाज के विषय में अच्छा उल्लेख भी किया है।'

मुझे स्वयं को आश्चर्य हो रहा है कि तुम इस ट्रेन में कैसे आये? उसके बाद मनसुखराम शिक्षक को लगा कि भगवान को मेरे लिए इतना सारा कष्ट उठाना पड़ा। मुझे इतना सारा संभाला जानकर उन्होंने त्यागपत्र दे दिया।

उसके बाद उन्होंने बहुत बड़ा यज्ञ करवाया। उस यज्ञ में, मैं बचपन में अपनी माँ के साथ गया था, ऐसा मुझे याद है। उसी प्रकार घर बैठे और गाँवों की स्कूलों को जाँचने का काम किये बिना तुम्हारी नौकरी चल रही है। यह एक बड़े आश्चर्य की बात है।

भगवान की कृपा का सबसे बड़ा लक्षण यह चमत्कार है। कितने ही अधिकारी बीमार होंगे और होते होंगे किन्तु उन सबके साथ ऐसा होता हो, ऐसा सुना नहीं है। इसका रहस्य समझें। भगवान का अधिक से अधिक स्मरण करते रहें। ●

स्वजनों के शरीर की तकलीफों को भुगतना

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

मैंने बीच में तुम्हें लिखा था कि मेरा पैर टूट गया है और मैं पैर घसीटते चलता हूँ तथा शरीर में इतनी सारी अशक्ति है और ऐसा ही अनुभव भाई कर रहे हैं। इसके अलावा भाई के शरीर का यह शरीर अन्य भी बहुत भुगत रहा है। जिन-जिन जीवों के साथ इस 'जीव' का संबंध है, उस-उस जीव की प्रकृति और इस जीव की प्रकृति एक है। पुरुष भी एक और प्रकृति भी एक है। पुरुष का संपूर्ण परिपक्व अनुभव होने के बाद उसमें निष्ठा प्राप्त होने पर भी प्रकृति एक है। ऐसा अनुभव इस प्रकार की आत्मा को होता रहता है। जगत और समाज सदा मुर्दों को पूजनेवाला है। जीवित को कोई समझता भी नहीं और पहचानता भी नहीं है। यह शरीर नहीं होगा, तब विभिन्न प्रकार के जीव की प्रकृति का इस जीव का शरीर जो भोग रहा था वह सब जब उसके जीवनवृत्तांत में लिखा जाएगा तब लोग आश्चर्य करेंगे। तब सोचेंगे कि अरेरे ! जीवित थे तब तक लाभ न उठा सके। अतएव तुम्हें किसी बात की चिंता-फिकर नहीं करनी है। इतना दिल से सोचना कि शिर पर समर्थ मालिक है। भगवान का आशर ही सबसे बड़ा आशर है। इसलिए तुम पर जो भी बीते उससे घबराना नहीं या रुकना नहीं। सगे-संबंधियों को बुलाना नहीं। इसमें मेरी संपूर्ण संमति है। उल्टे वे लोग वातावरण को बिगाड़ेंगे। तुम सतत भगवान का स्मरण करते रहो और छुट्टी ले लेना। हमें भाई से किसी भी प्रकार

से अलग नहीं पड़ना है। यदि जाएगा तो शरीर जानेवाला है, दिल जानेवाला नहीं है। इसलिए पूरी हिंमत रखना और 'मोटा' को सदा साथ में रखना। उसे अलग मत करना। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

भाई को हम से शांति प्राप्त हो वैसा करना। अपने शरीर की परवाह न करना। उसे रखनेवाला राम है। ऐसा पक्का भरोसा रखना। भाई के साथ जैसे शरीर से हूँ वैसे हृदय से भी हूँ। ●

प्रभुप्रार्थना से कृपाशक्ति प्राप्त होगी

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

तुम किसी बात से घबराना नहीं। तुम्हारे साथ मेरा हृदय है ही। कृपाकर हिंमत रखना। प्रभु समर्थ है। उनकी कृपाशक्ति प्रार्थना लगातार करके माँगती रहना। हरिस्मरण अच्छे ढंग से करते रहें।

भाई के साथ रहने हेतु प्रभुकृपा से हृदय में हृदय से हूँ। कृपा करना, तुम पर आधार है। तुम किसी बात से ढीली न पड़ना। हिंमत, बल रखकर सशक्त रहना। तुम पर उनकी मदद रहेगी। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

भाई के शरीर की हकीकत मुझे लिखती रहना। प्रभु करे और कुछ उल्टा-सीधा हो तो तार भी करवाना। अंतिम क्षण ही न आवे वह तो उत्तम और यदि ऐसा लगता है तो मैं वहाँ उपस्थित हो जाऊंगा। मेरे शरीर में कैसा चल रहा है, ऐसा लिखने से भी क्या अर्थ है? भाई के साथ होने

का प्रभु की कृपा का प्रयत्न होता है। ये तो भावना की सूक्ष्म बातें हैं। तुम पर मेरा आधार है। तुम हिंमत रखना और पौरुष रखना। 'सुख दुःख किसी के टालने पर नहीं टलते।' इसलिए उन पर कोई लक्ष न जाय वही उत्तम। भाई को हृदय से प्यार। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

भाई के शरीर की वास्तविकता पढ़ी। पढ़कर हृदय लोह जैसा कठोर रख चल रहा हूँ। हममें भी भावना होती है। तटस्थता, समता यानी कोई पत्थर नहीं। गुजरात में रहूँगा तो विपरीत परिस्थिति में कुछ नहीं तो उपस्थित तो जल्दी रह ही सकूँगा। भाई के शरीर की ऐसी दशा में वहाँ अधिक रहने को दिल ही नहीं होगा। इससे तो तुम्हें और तुम्हारी सेवा में बहुत ही कठिनाई होती होगी। अब तुम्हें स्कूल से आधे वेतन पर छुट्टी ले लेनी चाहिए। नहीं तो संसार में बातें होंगी। उसकी चिंता नहीं है परन्तु हमारी सेवा में कमी रह जाएगी। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

प्रभु की कृपा को हृदय से समझती रहना। लिख-लिखकर क्या हिंमत, धीरज की प्रेरणा दे सकूँगा? यह तो हृदय का काम होता है।

इस जीव का शरीर तो कितना सारा कितनों का सहता है, यह तो सिद्ध हो चुका तथ्य है। तुम्हें उसका ज्ञान बोध हो रहा है, यह अच्छी बात है।

मरद बनना और फना हो जाना। ●

अशांति, क्लेश में हरिस्मरण करें

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

ऊब आने से और अधिक उकताहट होगी। जितना हो सके शांति, स्वस्थता से उसे भोगते रहो वही उत्तम है। जान बूझकर शरीर को अलग कर देने में भी सार नहीं। जितना हो सके हरिस्मरण, प्रार्थना आदि में रह सकें ऐसे प्रयत्न में जीने से कुछ न कुछ हल्कापन बना रहेगा। इस जीवन में ऊब, परेशानी, अशांति, क्लेश आदि जितनों को जन्म दिया उतने ही बल्कि उससे भी अधिक अनुपात में वे सामने आकर डटे रहेंगे ही, यह निश्चित समझना। ये सभी भूत मेरे साधनाकाल में सामने आये थे। उसे दूर करने में तो दम ही निकल गया था। यदि प्रभुकृपा बरसती न होती तो संभव भी न होता। इसलिए कृपाकर परेशानी या ऊब होते जागृति ला लाकर हरिस्मरण में लग जाने में सयानापन है। चेतते रहो, चेतते रहो।

अशांति, क्लेश में हरिस्मरण करें। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

कल तुम्हें एम. सी. का दर्द तीव्रतम हुआ, जानकारी हुई। दुःख आता है, तब चारों ओर से आता है, इसलिए इसे धीरज, प्रेम, शांति से सहन करना है। घुट-घुटकर मरने में मनुष्य—गरिमा नहीं है। घुट-घुटकर तो क्यों मरें? हमें तो मृत्युको हर्ष से स्वीकार कर स्वागत करना है या 'मृत्यु मरी गयुं रे लोल' ऐसा किसी गुजराती कवि का गीत है, उसे गाते हुए हमें तो हरिकृपा से जीवित रहना है। इसलिए आप कृपा करना। कृपा करना। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

भाई के शरीर की वास्तविकता की जानकारी मिली । प्रभुप्रार्थना करने में आर्तता, आर्द्रता प्रकट होती है । अब तो ऐसा लगता है कि गुजरात में होऊँ तो अच्छा रहेगा, जिससे ऐसा कुछ हो तो तुरन्त ही वहाँ आ पहुँचूँ । यह तो फासले दूरी का रास्ता । आते-आते चार दिन लग जायँ । राजकोट भी बार-बार आना-जाना महँगा ही पड़ता है । फिर आने पर तुम्हें कुछ कठिनाई में डालने जैसा होगा पर इतना निश्चित है कि गुजरात में होऊँ, तो तत्काल वहाँ पहुँचने में सरलता रहेगी ।

भाई को स्वयं जो कुछ होता है, वह सब स्पष्ट रूप से मुझे लिखा करते हैं, वह उत्तम है । मात्र तुम्हें दृढ़ रहना है । स्वयं के स्वजन को इस प्रकार अत्यधिक पीड़ा में देखना यह कोई खेल नहीं है । ●

॥ हरिःॐ ॥

मेरे प्यारे भाई,

तुम्हारे हाथ से लिखे पत्र को पढ़कर बहुत खुश हुआ हूँ । प्रभु तुम्हारे हृदय में हरिस्मरण की भावना जीवित रखे इतनी ही प्रार्थना है ।

कृपाकर जिजीविषा की भावना तो अखण्ड और संपूर्ण रूप से प्रत्येक में विद्यमान होती है । वह तोड़ने पर भी टूट नहीं सकती । इसीसे जीवन की अनंतता टिकी रहती है । शरीर का अंत, कोई जीवन का अंत नहीं है । शरीर के अंत से पुनर्जीवन की नयी संभावनाओं में प्रवेश करना होता है । जो काम अब शरीर से नहीं हो सकता अर्थात् जीव जिस प्रकार पुराने वस्त्र उपयोग में नहीं लेता और नया धारण करता है उसके जैसा ही वह करता है, ऐसी सहज रचना है । हरिस्मरण की भावना दृढ़ किया करोगे तो मुझ पर परम उपकार होगा । ●

‘मोटा’ की मदद प्राप्त करने की कला

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

कृपाकर कुछ मन में संग्रह नहीं करना, क्योंकि अब तो पूर्णरूप से खाली होना है ।

अंतर जागृत करने हेतु पहले तो बाहर से अचेत होना पड़ता है । साधना में भी वैसा ही है । भावना का अतिरेक होने से भावावेश में बार-बार बहते-बहते बाह्य बोध सभी प्रकार के भुलाकर अंतर में तल्लीन, एकाग्र, केन्द्रित हो और उस अभ्यास में जीवन्त निष्ठा जागृत होते ही सहज हो जाता है । उसके बाद बाह्य बोध नहीं चला जाता । तब भी अंतर की अंतर जागृति जागृत रहा करती है । कृपा करके इस जीव के चैतन्य को जाग्रत करके और कराके उसके सन्मुख मन में स्मरण कर जिया जा सके और यदि ऐसा हो सका तो मदद मिलने लगी है, अवश्य अनुभव होगा । ●

हरिस्मरणयुक्त कर्म यज्ञ है

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

मेरा आधार तो अब हे बहन ! तुम पर ही है, इसलिए कृपा करना । हिंमत रखते हुए धीरज, शांति के साथ सेवा करना । रोना-धोना नहीं तभी मेरी लाज रहेगी । तुम प्रेम से स्थिर चित्त से शांति से हरिस्मरण करते हुए जो करोगी वह एक यज्ञ है । तुम्हें जो कहना होगा उसे प्रार्थना द्वारा उसे निवेदित किया जा सकता है । ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

हम सबकी लाज रखनेवाला तो वह हजारों हाथोंवाला मालिक है । धीरे-धीरे भोजन भी कम होता जा रहा है और कमजोरी बढ़ती ही जा रही

है। अब मुझे लगता है कि अधिक देर नहीं लगेगी। इसलिए निश्चित होना। जीवन में संपूर्ण निराशा से भरे शरीर को छोड़ना यह हितावह नहीं है। किन्तु मनुष्य को कहा गया सभी थोड़े ही गले उतरता है! भगवान की कृपा के लक्षण प्रत्यक्ष जीवन में अनुभव होने पर भी जिस जीव के निराशा का पार नहीं, ऐसे जीव को क्या कहें और क्या बोलें? हमें भी संग तो मर्द का ही अच्छा लगता है। ●

प्रभु के मार्ग पर जाने की स्वजनों को हड़बड़ी नहीं है

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

तुम्हारा दि. २८-८-१९५७ का पत्र मिला। दि. २८-८-४१ तुम्हें याद आती है, वह प्रभु की कृपा है। उसे आज लगभग १६ वर्ष हो चुके हैं। उन १६ वर्षों के दौरान भी हम जीव स्वभाव की कोटि में भी सचमुच रागात्मक न हो सके। सांसारिक ढंग से भी मित्र मित्र को जिस उत्कटता से, आवेश से और आवेग से चाहता है, उतना भी हमारा प्रभुकृपा से नहीं बन पाया। वह मेरे लिए एक दुःख की घटना नहीं है। मानव जीवन का असली व्यवहार और दिशा किस-किस प्रकार की होती है, वे तो मुझे प्रभुकृपा से निकटस्थ स्वजनों के जीवन में आज भी देखने को मिलती हैं। प्रभुमार्ग पर बढ़ने की सच्चे हृदय से उमंग उत्पन्न नहीं हुई है तो किसी की भी प्रगति नहीं हो सकती। इस मार्ग में आगे बढ़ने के लिए जिस श्रद्धा की अनिवार्यता आवश्यक है, उसे भी किसी में नहीं देखता। इसलिए मेरे द्वारा प्रयोग रूप में प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी काम करके नहीं बता पा रहा हूँ। ऊपर बढ़ने के लिए सद्गुरु रूपी सीढ़ी में हृदय से स्वच्छ प्रेमभाव का अत्यधिक अभाव देख रहा हूँ। इसलिए कुछ भी प्राप्त न हो सके यह भी यथायोग्य है, तब भी 'भगवान की ऐसी इच्छा' ऐसा कभी भी इस जीव ने आश्वासन प्रभुकृपा से नहीं लिया है। प्रभुकृपा से उन उन

स्वजनों के जीवन में इस जीव ने यथासंभव हिस्सा लिया है। राजकोट में इस शरीर का अचानक बीमार पड़ना यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। अभी मेरा शरीर स्वस्थ नहीं है। दोपहर के बाद थोड़ा बुखार आ जाता है। कुछ शरीर स्वस्थ होने पर ही तुम्हें बतायी कुछ तांत्रिक विधि हो सकती है। शरीर को स्वस्थ होने में संभव है पन्द्रह-बीस दिन लें। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

बिस्तर से बैठने पर भी आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है और आँखे गिंचती-सी लगती हैं, ऐसा यदि दिन में बहुत बार हो तो... की इच्छानुसार हो जाय सही और इसमें देर भी न लगे। 'वेगनीन' की असर भी अब रोज के जैसी नहीं होती, ये सारे लक्षण प्रभु की इच्छा पूरी होने में मददरूप हो उसके जैसा है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

अभी मेरा स्वास्थ्य यात्रा कर सके, ऐसी स्थिति में नहीं है। अभी कमजोरी, अशक्ति अधिक है और भूख भी ठीक से नहीं लगती। अभी पन्द्रह दिन में स्वस्थ हो सकूँ ऐसा नहीं लगता। इसलिए फिलहाल मेरी आशा नहीं रखना।

भाई के शरीर की स्थिति के बारे में जानकारी की। धीरे-धीरे उनसे बोल न पाना, आँखें चढ़ जाना और सिर का अमुक हिस्सा बहरा होता जा रहा है। ये सभी लक्षण प्रभु की इच्छानुसार ही हुआ करता है। प्रभु की कृपा से इसके जैसे रोगवालों को जैसा भयंकर दर्द होता है, वह नहीं होता, यह भगवान की बड़ी कृपा है। इस कृपा का अनुभव कर भगवान के एहसानमंद बनो ! ●

स्वजन के लिए मोटा की भावना

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

सचमुच तो भाई को मरने की जरा भी इच्छा नहीं है। किसी भी जीव को मरने की इच्छा नहीं होती है, क्योंकि जिजीविषा की वृत्ति सदा जीवित रहने से ही इस शरीर के जीवन के बाद के जीवन का अनुसंधान बना रहता है। प्रत्येक प्राणीमात्र में जड़-चेतन दोनों में जिजीविषा की भावना की माला में पिरोये गये मनके में जिस प्रकार डोरी आरपार निकली होती है, उसी प्रकार जिजीविषा बनी रहती है। मनुष्य चाहे कुछ भी बोलता है, उसके बोलने का उस समय के दौरान ही कुछ अर्थ हो तो हो सकता है। जिसे मरना ही है, उसे कोई नहीं रोक सकता है। अभी मेरा शरीर स्वस्थ नहीं हुआ है।

मेरे देह के संबंध में तुम लोगों के लिए जैसा भाव है, वैसा भाव उनके लिए नहीं है। दूर त्रिचिनापल्ली से सिर्फ तुम्हारे लिए ही गुजरात में आकर बसने का इस बार ठाना है। इसमें किसी के ऊपर कोई उपकार नहीं है। परन्तु स्वजन के लिए इस जीव की भावना कैसी है, उसका जीता-जागता यह प्रत्यक्ष उदाहरण है। जिसमें गुणज्ञ की भावना ही नहीं, वह सज्जन कोटि का जीव नहीं है। इतना निश्चित समझना। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

डॉ. मोदी ने कहा, 'दिमाग में कैंसर आगे बढ़ गया है और खोपड़ी की हड्डियों को असर हुई है तथा तलवे का हिस्सा एकदम नर्म हो गया है।' किन्तु उस डॉक्टर को अभी भी वहाँ जाकर पूछना कि उन्हें इन सभी दुःख दर्दों से शरीर कब छुटकारा पाएगा ? अभी 'वेगेनीन' से चल रहा है, यह अच्छी बात है। मोर्फिया का इन्जेक्शन हो सके तो न लेना पड़े वही अधिक अच्छा। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्यारे भाई,

पूज्य माताजी तुम्हारे लिए कितनी अधिक चिंतित हो जाती हैं और कितना हृदय का भाव रखती हैं, वह उनके उदार स्वभाव को बतलाता है। उनके व्यवहार द्वारा भगवान हमें सिखाना चाहता है कि हमें भी अपने साथ जो स्वजन मिले हैं, उनके साथ इस ढंग से ही व्यवहार करना चाहिए। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

अब नाक से एकदम प्रवाही निकलता था, वह चार-पाँच दिन से पहले से कम मात्रा में निकलता है। उससे भाई को राहत तो सही! डॉक्टर का रिपोर्ट अच्छा नहीं यह तो ज्ञात हुआ, किन्तु दूसरा क्या कह रहे हैं, उसे जरूर लिखना।

खाने में मूँग का पानी लिया जाता है, वह अच्छा है। गाँठों के ऊपर अफीम और समुद्र की फेन दोनों लगाना शुरू किया, यह तो अच्छा हुआ। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

पूज्य माताजी हमारे प्रति कितना अधिक प्रेम और सद्भाव रखती हैं, यह प्रत्यक्ष देखकर हम भी जीवन में जिन-जिनको मिले हैं, उनके प्रति ऐसा ही व्यवहार हमें रखना चाहिए। यदि हम पूज्य माताजी जैसे दूसरों की सद्भावना को भोग लें और हम स्वयं दूसरों के प्रति ऐसा भाव न रखें, तो भगवान द्वारा हमें सिखाने और समझाने के लिए दिया गया पदार्थपाठ (बोधपाठ) मिथ्या चला जाएगा। मनुष्य का जीवन छोटा-सा

जीवन, कितनी सारी संभावनाओं से भरा पड़ा है। इसकी अभी हमें कहाँ जानकारी है ? ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

भाई के उपचार और सेवा में हमारी ओर से किसी भी प्रकार की कमी न रहे, उसका बहुत ध्यान रखना है। हमारे यहाँ कोई आये-जाये इससे भाई के शरीर की सेवा से हमारा लक्ष जरा भी कम नहीं होना चाहिए। उस ओर हमारा सचेष्ट ध्यान सदा लगा रहे वह बहुत आवश्यक है।

बीमारी के समय हमारे समाज में जो देखने जाने का रिवाज है, उसके पीछे तो हमें वे लोग उपयोगी हो सकें और मददरूप हो सकें, उसका असली उद्देश्य यही था और है। आज मैं अहमदाबाद में जहाँ तहाँ देखता हूँ कि बीमार आदमी के घरवालों को उन आनेवालों का उल्टा अधिक ध्यान रखना पड़ता है। चाय-पानी का व्यवहार करना पड़ता है, नहीं तो कहेंगे कि हमारा तो भाव भी नहीं पूछा। भाई के वहाँ आने के लिए मेरी कोई सलाह पूछे तो मैं साफ शब्दों में मना कर दूँगा। भाई के लिए जिसे सचमुच हृदय में सच्चा प्रेम हो, वे भाई के लिए हृदय में हृदय से प्रार्थना करें। भावनाओं का यह सच्चा उपयोग है। कोई हमें देखने नहीं आता ऐसा तो हमें कभी नहीं लगेगा और खराब भी नहीं लगेगा। उल्टा इससे भाई की सेवा में हम विशेष रूप से लगातार उस लक्ष में रह सकते हैं और अभी उसकी बहुत आवश्यकता है। ●

‘मोटा’ के साथ, संबंध से भावनात्मक बनें

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

मुझे अब जिस संबंध में हृदय की भावना नहीं होती, वैसा संबंध उसकी कृपा से बहुत ही अखरता है। जिस संबंध से जीवन में किसी भी प्रकार की

भावना जागृत न होती हो और भावना द्वारा त्याग, बलिदान, समर्पण, उमंग न जागते हों और यदि न होते हों तो संबंध का कोई अर्थ नहीं है। संबंध का उद्देश्य तो भावना प्रकट करने और भावनात्मकता के लिए है। इसमें से यदि कुछ भी अनुभव नहीं होता हो तो ऐसे संबंध का कोई अर्थ नहीं है। प्रभुकृपा से हमारा तो 'वह' चलाया करता है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

उसका इच्छित होगा ही। Let thy will be done ऐसा ज्ञान एवं भक्तिपूर्वक शरणागति का आशरा हमें पाना है। जिसे भगवान पर पूर्ण श्रद्धा-विश्वास है, वह तो जो कुछ भी मिले, उसे प्रसादी समझ प्रेम से स्वीकार करता है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

किसी भी संयोग में तुम्हें घबराना नहीं है। हृदय में हर तरह से धीरज रखें और दृढ़ साहस रखें। किसी भी प्रकार की चिंता न करें। विशुद्ध भावना अर्थात् जो हमारा प्रिय हो उसका कल्याण हो, ऐसा आचरण करें। लोगों की तरह आँखों से आँसू टपकाना, वह कोई भावना का सही स्वरूप नहीं है। हमें तो उसकी सेवा में एकरूप हो जाना चाहिए। हमारी सेवा से उसे पूरा आत्मसंतोष हो तो ही हमारी सेवा का सही मूल्यांकन हो पाएगा। अतएव, भाई की सेवा में हमारी ओर से किसी भी प्रकार की कमी न रहे, उसका ध्यान रखें और उनकी सेवा में सतत लगे रहें। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

भाई आपको ज्ञात होना चाहिए कि यदि तुम घबराते हो उससे हमें लांछन लगेगा और शर्म आएगी। इसलिए कृपाकर अभी तक जो शांति और स्वस्थता बनाये रखी है, उसे बनाये रखें। जब भी तुम्हारा मन करे, मुझे बुला लेना। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

अब तक तुम्हारा मस्तिष्क और बुद्धि स्पष्ट रूप से और निश्चित रूप से काम कर रहे हैं, इसका मुझे विश्वास है। जो वास्तविकता तुम्हारे जैसे दर्द की स्थिति में है, वह दूसरे रोगी में संभव नहीं है। कृपाकर किसी भी प्रकार से घबराहट में न पड़ें और असमंजस में भी न पड़ें। सब किसी के शरीर का परिणाम तो निश्चित है ही। ऐसा हमारा भी होगा। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

शरीर तो अपने लक्षणों को अलग-अलग ढंग से बदलता रहेगा। अब हमें किसी बात से घबराना नहीं है। सारा डर रखकर कुछ हाँसिल नहीं होगा। इसलिए उस पर ही सब कुछ छोड़ दो और जो होनेवाला है, वह तो होनेवाला ही है। प्रत्येक जीव में सतत एकरूप से चलती रहती जिजीविषा जीवन की अनंतता का सूचक है। इसी जिजीविषा की भावना के कारण ही जीवन की अटूटता रही है। इसलिए जीवन मिलेगा ही। वह तो सदा है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

प्रभुकृपा अपार है। केवल शरीर के विषय में हम माँगे और इच्छा करें उस ढंग से फलती हुई हमें नहीं लगती। तब भी जीवन के विषय में वह काम आ सकती है। ●

हरिस्मरण न करने का दण्ड

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन एवं महात्माश्री १०८ रमाकांत साहब,

हमारे महात्मा वहाँ दोपहर में सोते हैं कि नहीं ? भूलचूक से यदि सोते हों तो उन पर तुम एक घड़ा ठण्डा पानी डाल देना। यदि भगवान का नाम न बोलते हों तो एक डण्डा सिर पर मारना। नहीं तो एक अंगारे को लेकर चिपका देना। यह कोई मजाक में नहीं लिख रहा हूँ। सचमुच लिख रहा हूँ। ऐसा होगा तभी उन्हें सचमुच पता चलेगा। सारा जीवन ऐसे ही बह गया, तब भी साहब की आँख नहीं खुली। इसलिए कृपाकर आप सभी बहुत-सा हरिस्मरण करते रहना। ●

स्वजनों की मृत्यु के समय 'मोटा' की प्रार्थना

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

प्रभुकृपा से प्राप्त स्वजन की मृत्युकाल की मति की गति श्रीप्रभु के चरणकमल में ही समर्पित हो ऐसी मेरी प्रार्थना उससे सदा होती रहती है। यह वास्तविकता भी प्रयोगसिद्ध है। नंदुभाई की माताजी का अंतिम समय था। दो घण्टे तक नाड़ी भी डॉक्टरों के हाथ आती न थी और तीन डॉक्टरों की कमिटी बुलायी थी, ऐसी उनके शरीर की गंभीर हालत

थी। ऐसी बेला में भी एकमात्र हरि का स्मरण ही वे करती रहीं और वह भी बोल कर। डॉक्टर को भी आश्चर्य होता था कि उनके शरीर की ऐसी गंभीर स्थिति में भी वे इस तरह से बोल कैसे रहीं हैं ? इसलिए भैया, तुम निश्चित रहना। शरीर से तुम से दूर होने पर भी मेरा हृदय तुम्हारे साथ है। मेरा ध्येय है कि तुम्हारी भावना—तुम्हारे हृदय की भावना भगवान में बनी रहे। तुम्हारे शरीर की स्थिति और उसका दर्द देखते हुए किसी भी मनुष्य से तुम्हारे जैसे रह सकना संभव नहीं है। भगवान की कृपा का तुम्हें अवश्य साथ है।

बहन को ज्ञान होना चाहिए कि यही सही समय है, भाई की सच्चे ढंग से सेवा करने का। सचमुच, अभी हिंमत रखनी है। किसी भी प्रकार से उन्हें कमी नहीं होने देना। जिसमें सरलता और शांति मिले वैसा करते रहना। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई,

अभी तुम्हारी लिखावट में कहीं कंपकंपी नहीं है। तुम सुरक्षित हो पर शरीर से नहीं। वर्तमान मन की दशा से नवजीवन का निर्माण है। ●

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

भाई के शरीर की सारी वास्तविकता ज्ञात की। अब ही हमें सचमुच सावधान रहना है। किसी बात से घबराना नहीं है। हिंमत और धीरज पूरी तरह से रखें। ●

अंतर की जागृति वही जीवन विकास की नींव

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय भाई तथा बहन,

पुनःसर्जन के नवजीवन के विकास के लिए अलग शरीर की सचमुच की घड़ी आ चुकी है। घड़ी चूके तो सबकुछ चूके। इसलिए हमें तो इस समय के दौरान प्रभुकृपा से बहुत समझदारी, हिंमत और पराक्रम से सजग रहना है। अंतर की जागृति ही जीवनविकास की नींव है। प्रभुकृपा से उसे टिकाना ! शरीर तो ऐसी जागृति लाने के लिए मात्र एक साधन है। शरीर से अधिक अंतर के साधनों का बल कितना गुना बड़ा होता है और यह बल ही अभी काम आ रहा है। अब शरीर की घड़ी निकट है। इसलिए कृपाकर अंतर में जागृत रहते हुए सजग रहें। ●

दि. १२-११-१९५७, नड़ियाद

॥ हरिःॐ ॥

प्रिय बहन,

कल यहाँ हमारा सब ढंग से ध्यान रखनेवाले और आश्रम को सभी प्रकार से सहायता करनेवाले भाई कुबेरदास का हृदय बंद होने से स्वर्गवास हो गया है। आज दूसरा दिन है। सभी ढंग से भगवान कठिन परीक्षा कर रहा है। यह भी उसी की कृपा है।

किसी भी बात से परेशान न हों और न उलझें। जैसी तुमने हिंमत दिखा कर मेरी आबरू रखी है, वैसी ही रखना।

तुम्हारे व्यवहार से तुमने मुझे सुशोभित किया है। वैसे अब भी पालन करें।

॥ हरिः ॐ ॥

॥ हरिःॐ ॥

साधना-मर्म

- (१) मुख से या मन में जागृत रूप से जप : साथ ही हृदय प्रदेश पर ध्यान तथा चेतना चिंतन के साथ भावात्मक भाव का रटन ।
- (२) प्रत्येक क्षण में सतत समर्पण : अच्छे तथा बुरे दोनों का ।
- (३) साक्षीभाव, जागृति : विचारों की शृंखला न जोड़ें ।
- (४) हो सके उतना अधिक वाचिक और मानसिक मौन रखें । अभ्यस्त हो अत्यधिक शरणभाव से जीवन में चेतनापूर्वक जागृति व्यवस्थित करें ।
- (५) आग्रह - प्रभु चिंतन के अलावा सभी आग्रहों को छोड़ें; नम्रता रखें, शून्य होने का ध्येय रखें ।
- (६) बहुत भावपूर्ण हृदयस्थ हो आर्द्र और आर्तभाव से प्रार्थना करें । भगवान को सभी सुख-दुःख बतलाते रहें; उनके साथ आत्मनिवेदन द्वारा बहुत गहरा व्यक्तिगत संबंध स्थापित करें; मन में कुछ भी विचार न आने दें । रिक्त रहें ।
- (७) जो भी कार्य करें, प्रभु का है समझकर करें; जरा भी संकोच किये बिना उसे बहुत प्रेमपूर्वक करें, प्रत्येक प्रसंग-घटना हमारे कल्याण के लिए ही है और प्रत्येक प्रवृत्ति हमारे अपने ही विकास के लिए होनी चाहिए, प्रत्येक प्रसंग के पीछे प्रभु का गूढ़, शुभ संकेत छिपा है ।
- (८) आत्मलक्षी-अंतर्मुखी बनें, मात्र अपनी दुनिया में रहें । जान बूझकर अपने आपको न उलझने दें ।

- (९) अन्य (दूसरों) की सेवा प्रभुसेवा समझें; सेवा लेनेवाले सेवा देनेवाले पर सेवा का अवसर देकर उपकार करते हैं। राम ने दिया है और राम को दे रहे हैं, वहाँ 'मेरा मेरा' कहाँ रहा ? तुम्हारा इस जगत में है क्या ?
- (१०) प्रत्येक कर्म, प्रत्येक बातचीत, व्यवहार हमारे ध्येय को गति दे ऐसे उद्देश्य को लक्ष्य में रख कर करें। पढ़ते-लिखते समय और प्रत्येक कर्म करते समय भाव की स्मरणधारणाओं का अभ्यास करते रहें।
- (११) वृत्ति का मूल खोजें, उसका पृथक्करण करें। उसमें खोये बिना, उसका तटस्थतापूर्वक और स्वस्थतापूर्वक निरीक्षण करें।
- (१२) प्रभु की प्रत्येक कला, सौन्दर्य, रमणीयता, विशुद्धता आदि प्रभु के वरदानों में रहे भाव का, उसके उसके अनुरूप भाव, तब हम में प्रगट हो, ऐसी प्रार्थना करें।
- (१३) उमंग, आवेश और प्रेमभाव को ऐसे ही न जाने दें; साथ ही उसमें डूब भी न जाएँ। उसका साधना में उपयोग करें; तटस्थता बनाए रखें।
- (१४) खाते और पानी पीते हुए जीवन में चेतनशक्ति के अवतरण-भावकी प्रार्थना करें; शौच, पेशाब आदि क्रियाओं के समय विकारों, कमजोरियों आदि का विसर्जन भाव से प्रार्थना करें।
- (१५) स्थूलता को त्यागकर, सूक्ष्म तत्त्व को ध्यान में रखें। वृत्ति की शुद्धि करें, भाव की वृद्धि करें।
- (१६) प्रभु सचराचर हैं। आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना रखें।
- (१७) प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु के उज्ज्वल पक्ष को ही देखें। किसी के भी काजी न बनें; किसी को भी जल्दी से अभिप्राय न दें;

वाद-विवाद न करें; अपना आग्रह न रखें; दूसरों में शुभ हेतुओं का आरोपण करें; मानसिक और सार्वत्रिक उदारता जीवन में प्रगट करें; अत्यधिक प्रेमभाव बनाए रखें; प्रकृति का रूपान्तर करना है, उसे लक्ष में रखकर प्रकृतिवश होनेवाले कर्मों को वश न हो कर आगे बढ़ें; फल की आसक्ति त्यागें; स्वयं पर होते अन्यायों—आ पड़ते दुःखों—आदि का मूल हम में ही है, इसे दृढ़तापूर्वक मानें। गुरु में प्रेमभक्तिभाव दृढ़ बनाये रखें; तटस्थता, समता और समर्पण के त्रिवेणी संगम को नित्य बनाए रखें। सदा प्रसन्नता बनाए रखें; कृपा और पुरुषार्थ के युगल को जीवन में उतारें; प्रत्येक कर्म के आदि, मध्य और अंत में प्रभु की स्मृति बनाए रखें; मन को निःस्पंद करें; राग-द्वेष निर्मूल करने की जागृति सतत रखें; आध्यात्मिक अनुभवों को नित्य के व्यावहारिक जीवन में आचरण में लायें; कहीं भी किसी भी दायित्व से भागें नहीं; जो भी प्रभुइच्छा से प्राप्त हो, उसे प्रभुप्रसाद समझ प्रसन्नता से ग्रहण करें। कहीं भी किसी से तुलना न करें; अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति, यह मन का भ्रम है; जीवन साधना के लिए सब कुछ सानुकूल ही होता है; प्रभुमय-उनके मूक यंत्र-होने ही एक तमन्ना ही जीवन में बनाए रखें।

- (१८) कर्म में, कर्म का महत्त्व नहीं है, किन्तु जीवन के भाव का सतत एक समान सजग चिंतन रहा करे, यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। ऐसा सजग अध्ययन कर्म करते हुए क्षणों में बनाए रखें।

॥ हरिःॐ ॥

पूज्य श्रीमोटा के जीवन का परिचय

- जन्म : ता. ४-९-१८९८ भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी,
संवत् १९५४
- स्थान : सावली, जिल्ला वडोदरा (गुजरात)
- नाम : श्री चूनीलाल
- माता : श्रीमती सूरजबा
- पिता : श्री आशाराम
- जाति : भावसार
- १९१६ : पिता की मृत्यु ।
- १९०५ से १९१८ : टुकड़ों में पढ़ाई के साथ कठिन मजदूरी ।
- १९१९ : मैट्रिक उत्तीर्ण ।
- १९१९-२० : वडोदरा कॉलेज में ।
- दि. ६-४-१९२१ : कॉलेज का त्याग ।
- १९२१ : गुजरात विद्यापीठ
- १९२१ : विद्यापीठ का त्याग । हरिजन सेवा का आरंभ ।
- १९२२ : मिरगी की बीमारी से तंग आकर गरुड़ेश्वर की चट्टान से आत्महत्या का प्रयास, दैवी रक्षा; 'हरिःॐ' जप से रोग मिटाने का सफल प्रयोग ।
- १९२३ : 'तुज चरणे' तथा 'मनने' की रचना ।
- १९२३ : वसंतपंचमी को पूज्य श्रीबालयोगीजी द्वारा दीक्षा ।

श्रीसद्गुरु केशवानंद धूणीवाले दादा के दर्शन के लिए साईंखेड़ा गए । रात्रि को स्मशान में साधना और दिनभर प्रभुप्रीत्यर्थ हरिजन सेवा ।

- १९२६ : विवाह - हस्तमिलाप के अवसर पर समाधि का अनुभव ।
- १९२७ : हरिजन आश्रम, बोदाल में सर्पदंश - परिणामस्वरूप 'हरि:ॐ' जप अखंड हुआ ।
- १९२८ : 'तुज चरणे' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन ।
- १९२८ : प्रथम हिमालय-यात्रा ।
- १९२८ : साकोरी के पूज्य श्रीउपासनीबाबा का नडियाद में आगमन, उनके आदेश पर साकोरी गये, वहाँ मलमूत्र के बिस्तर में सात दिन ।
- १९३० : मन की नीरवता का साक्षात्कार ।
- १९३० से ३२ : इस दौरान साबरमती, विसापुर, नासिक और यरवडा जेल में । उद्देश्य देशसेवा का नहीं, साधना का । कठोर परिश्रम और लाठी चार्ज के दौरान प्रभुस्मरण-मौन । विद्यार्थियों को समझाने के लिए विसापुर जेल में सरल गुजराती भाषा में श्रीमद् भागवद्गीता को लिखा—'जीवन गीता' ।
- १९३४ : सगुण ब्रह्म का साक्षात्कार ।
- १९३४ से १९३९ : इस दौरान हिमालय में अघोरीबाबा के पास जाना हुआ । धुंवाधार के झरने के पीछे की गुफा में साधना । चैत्र मास में २१ उपलों की ६३ धुनियाँ प्रज्वलित की, नर्मदा किनारे खुले में शिला पर नग्न बैठकर साधना; शीरडी के साईंबाबा के प्रत्यक्ष दर्शन—आदेश—साधना के अंतिम चरण का मार्गदर्शन ।

- १९३९ : दि. २९-३-३९ : रामनवमी संवत १९९५ काशी में निर्गुण ब्रह्म का साक्षात्कार। हरिजन सेवक संघ से त्यागपत्र। 'मनने' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन।
- १९४० : दि. ४-९-४० : हवाई मार्ग से अहमदाबाद से करँची जाने का गूढ़ आदेश।
- १९४१ : माता का अवसान।
- १९४२ : हरिजन सेवक संघ से अलग होने पर भी हरिजन कन्या छात्रालय के लिए मुंबई में चन्दा इकट्ठा किया। दो बार सख्त पुलिसमार देहातीत अवस्था के प्रमाण।
- १९४३ : २४, फरवरी में गाँधीजी के पेशाब के जहरीले जन्तुओं का अपने पेशाब में दर्शन। नैमित्तिक तादात्म्य का अनुभव।
- १९४५ : हिमालय की यात्रा - अद्भुत अनुभव।
- १९४६ : हरिजन आश्रम, अहमदाबाद मीरां कुटीर में मौन एकांत का आरंभ।
- १९५० : दक्षिण भारत के कुंभकोणम् में कावेरी नदी के किनारे हरिःॐ आश्रम की स्थापना। (१९७६ में देहत्याग के बाद आश्रम बंद कर दिया गया।)
- १९५४ : सूरत के कुरुक्षेत्र जहाँगीरपुरा के स्मशान में एक कमरे में मौन एकांत का आरंभ।
- १९५५ : दि. २८-५-५५ : नडियाद, शेढी नदी के किनारे हरिःॐ आश्रम की स्थापना।

- १९५६ : दि. २३-४-५६ सूरत जहाँगीरपुरा कुरुक्षेत्र में हरिःॐ आश्रम की स्थापना ।
- १९६२ से १९७५ : शरीर के अनेक रोग-लगातार प्रवास के साथ ३६ आध्यात्मिक अनुभव ग्रन्थों का लेखन-प्रकाशन ।
- १९७६ : फाजलपुर, मही नदी के किनारे श्री रमणभाई अमीन के फार्म हाउस में दि. २३-७-७६ को मात्र छः व्यक्तियों की उपस्थिति में आनंदपूर्वक देहत्याग । स्वयं के लिए 'इँट चूने का स्मारक न बनाने का आदेश' और इस निमित्त प्राप्त राशि का उपयोग गुजरात के दूरदराज पिछड़े गाँवों में प्राथमिक पाठशाला के कमरे बनवाने में उपयोग करने की सूचना ।

॥ हरिःॐ ॥